२२९
कहानी

कुन्ज विहारी स्मृति ग्रन्थ माला का प्रथम पुष्प

"बातां-री-चानणी"

भाग पैलड़ो

लेखक—स्व० श्री कुन्ज विहारी शर्मा, बी. ए., साहित्य रत्न

प्रकाशक
नगर-श्री
चूरू

संपादक
गोविन्द अग्रवाल

१.५०

प्रथम संस्करण १०००

सं० २०२५ वि.

मोल [redacted]

प्रकाशक
सुबोधकुमार अग्रवाल
मन्त्री, नगर-श्री
चूरू

• ॐ •

कुन्ज बिहारी स्मृति ग्रन्थ माला
की छपाई की सरुवात करणियाँ

ग्रन्थमाला को यो पैलडो पुष्प
ई कै सिरजनहार की
अमिट स्मृति नै समर्पण करै है
घणैमान स्यूं

— टीप —

समर्पण
प्रकाशक की तरफ स्यूं
भूमिका

६११६४
२.९.१९६०

पानों

धींसो मुक्कल	१
सेवक भक्त स्वामी	६
बैजू बाबू की बात	११
नौ मण को नाथ बाबो	१५
तुलसी राम जी म्हाराज	१६
राम रतन जी डागै की बात	२४
कासमीरी तूस	२७
दलजी खिजड़ोलियो	३०
राजपूत की मांग	३७
छोटू म्हाराज की बात	४१
लाख रिपियां की बात	४५

कुञ्ज विहारी स्मृति ग्रन्थ माला

के

स्थाई सदस्य बन कर

साहित्य सेवा में योग दीजिए

स्थाई सदस्यों को ग्रन्थ माला की प्रत्येक पुस्तक २०% छूट से दी जायेगी, विशेष जानकारी के लिए पूछिये—

पुस्तक बिक्री विभाग

नगर-श्री, चूरू

चूरू (राजस्थान)

विहारी स्मृति ग्रन्थ मा

के

ई सदस्य बन कर

सेवा में योग दीजि

न्यों को ग्रन्थ माला की प्रत्येक

जावेगी, विशेष जानकारी के

पुस्तक विक्री विभा

नगर-श्री, चूरू

चूरू (राजस्थान)

बाता ही चालें

स्व० श्री कुञ्ज विहारी शर्मा बी० ए०, साहित्य रत्न

- प्रकासक की तरफ स्यूं -

देस के कूणै-कूणै में बसणै वाला कोड़ां न कोड मिनखां में लाखां मिनख इस्या होवै है, जिकां की बातां ई चालै । "बातां ई चालै" एक राजस्थानी मुहावरो है जिकै नैं लोग घणो ईं आपरै, जियां कोई आदमी आप की ठाडाई को ठरको दिखावै जद या ही कैवै 'क इसी करूंगा सतेवड़ी, जिको "बातां ईं चालैगी ।" ई बातां को ठेको फकत बडै आदमियां ताणी ईं कोनी होवै । मिनख समाज में रेवणियै हर घर घिरस्ती, साधु-सन्यासी, लुगाई-मोट्यार, चोर बदमास अर छोटै बडै सगलां स्यूं अै जुडेड़ी होवै है ।

चूरू जिलै में हजारां ही लोक-कथावां कैई-सुणी जावै है । ये कथावां सैकड़ो हजारूं बरसा सें आज ताणी जबानी ही चालती आवै है । दादी पोता नै अर नानी दोयता नै बाता कैवती । संज्या होता ई टाबरिया नानी दादी के बार कर फिर ज्याता अर बातां को सिल-सिलो पीढी दर पीढी चालतो रेवतो । पण या परंपरा अब बेगी स्यूं बेगी खतम होती जा रैई है । आज का टाबरिया आपकै बडेरा कं कन्नै बैठता कतरावै अर बांस्यूं दूर-दूर भागै, जद बां के पल्लै पुराणी बाता कियां पड़ ? इसी तरियां ढाढी, ढोली अर मिरासी लोग भी आप के जजमानां नैं बातां, कहाणियां सुणाया करता, पण अब या परपाटी भी जावक टूट रैई है अर बां के सागै-सागै आपणै लोक-जीवन को मुंह बोलतो इतिहास भी

खतम होवतो जावै है। लोक-कथावां नै नस्ट होतां देख कर अब आं कथावां नै भेली कर कै छपाणे को ध्यान भी राजस्थान का लोग कर रैया है, या चोखी बात है। आपणे चूरू स्यूं ही भाई गोविन्द अग्रवाल हजारां राजस्थानी लोक-कथावां छपाई है।

लोक कथावां में ऐतिहासिक कथावां नै छोड़कर बाकी का सारा नांव पंथा कल्पित ही होवै है। घणखरी कथावां तो बिना नांव कै ही चालै, "एक राजा हो, बीं कै सात बेटा हा......।" पण आं बातां में पूरा नांव-पंथा अर पूरी घटनावां होवै है, ईं खातर समाज को घणो ऊघड़वां चित्र आं बातां में देखण नै मिलै। अै बातां ही इतिहास अर ख्यात को कालजो होवै। भावी इतिहास का बीज आं बातां में रल्यड़ा होवै। ईं खातर आं बातां की रुखवाली करणै की अर आंनै सा'माकर राखणै की भोत जरूरत है। मन्नै तो आं बातां में भविष्य के इतिहास को हेलो सुणै है।

इस्यो किस्यो गांव है जिके में १००-५० प्रेरणादायक बातां नै चालती होवै? कई बातां तो दस-बीस पचास बरस चाल कर थम ज्यावै, पण कई बातां सैकड़ी बरसां तांईं पीढ़ी दर पीढ़ी चालती रैवै अर गुड़कती गुड़कती कठै की कठै ईं पूंच ज्यावै। पण ज्यूं ज्यूं टेम गुजरै ज्यूं असली नांव पंथा भूली में पड़ता जावै अर साची घटनावां अर बातां लोक कथावां में मिलकर आपको सागी सरूप खो देवै। समाज में जद लिखणै पढ़णै को इतणो चरसो नहीं थो तो ... आं बातां नै कैवता सुणता अठै ताईं ले आया, पण ... आपके असली रूप में लिख कर सुरक्षित करणो

घणो जरूरी है ।

नगर-श्री के मोटै काम 'जलम भोम चूरू की गौरव गाथा' लिखणै ताणी खोज-बीन करता थका कई गावां अर कस्बां मे जाणै को सजोग बण्यो तो बठै भांत-भांत की अनेकानेक बातां सुणण नै मिली । मन होयो, बातां घणमोली है, आंनै जरूर भेली करणी चाये, नहीं तो अँलीसाट चली जासी । या बात साथ्यां आगै राखी तो सारा ई साथी ईं बात की घणी जरूरत समझी ।

चूरू का मानेड़ा विदवान, नगर-श्री का संस्थापक सदस्य अर म्हारा हमजोली स्व० पं० कुंजविहारी जी स्यूं मैं आं बातां नैं मांडणै की अरज करी । बिहारी जी का स्व० पिता प०श्री कानीराम जी बातां का खजाना हा । आपकी जिनगानी मे वे भोत सी आंता तो आप की आंख्यां देखी ही अर भोत सी कानां सुणी ही। हर तरै के आदमियां में बै रैया हा, मोकै-मोकै की बातां बा के याद ही अर कैता भी भोत टा स्यूं । कुंजबिहारीजी बा कन्नै स्यूं सुणेड़ी कई बातां म्हानै सुणाया करता । मैं बानें कंयो, आं बातां नैं लिखकर छपावां । बिहारीजी बात मानली अर बातां लिखणी सरू कर दी । पण बेमाता की गति को क्युईं बेरो कोनी पड़ै । बिहारी जी कोई १०-१२ बात ही मांडी ही 'क बानें परमात्मा के घर को बुलावो आग्यो अर काम बठै को बठै ई पड़्यो रहग्यो ।

अब नगर-श्री स्यूं श्री कुंजबिहारी जी की याद नैं स्याई बणाणै खातर "कुंजबिहारी स्मृति ग्रन्थ माला" को प्रकासन सुरू

कर्यो गयो है अर पैली-पोत बिहारी जी की लिखेड़ी बातां ही प्रकासित करी जावं है । आगे भी ई विधा नै चालू राखणै को प्रयत्न बराबर कर्यो जासी । "बातां ही चालै" के दूसरे भाग की कथावां भी आं लिकोलिया को लेखक लिख कर त्यार कर राखी है, जिकी आगलै प्रकासन में देई जासी ।

ई ग्रन्थमाल नै सरू करणै को प्रयत्न तो नगर-श्री स्यूं ही कर्यो गयो हो पण ई के प्रकासन की व्यवस्था सेठ हणूतमलजी सुराणा करदी, जिकै स्यूं प्रकासन हाथ को हाथ होग्यो, जीं खातर सुराणा जी नै घणो धन्यवाद दियो जावै है । हणूतमलजी के सागै बिहारी जी को घणो सनेह रेयो, ई खातर सुराणा जी झट सैं म्हारी बात मानली । स्व० बिहारीजी को भोत घणै लोगां स्यूं गैरो संपर्क हो जिकां में घणा ई पूरा सरतरिया है अर आज के दिन रामजी बां पर राजी है । वै लोग चावै तो ई ग्रन्थमाला नै बराबर चालू राखणो कोई कठिन काम कोनी ।

बातां की भाषा चूरू अर चूरू के आसै पासै बोली जाणै वाली एक दम बोल-चाल की भाषा ही राखी गई है, जिकी खड़ी बोली हिन्दी के भोत नेड़े लागती है । कथावां नै टीपणै के बाद स्व० बिहारीजी आं नै फेरूं नईं देख सक्या, ई खातर भाई गोविन्द अग्रवाल आंकी कोर कसर काढ़ कर नई पांडु लिपि बणाई है और पोथी को संपादन फूटरै ढंग स्यूं कर्यो है ।

राजस्थानी का लूंठा विदवान डा० मनोहर जी शर्मा पोथी की भूमिका लिखणै की खेचल करी है, ई खातर वां को घणो गुण

मानूं हूं। पोथी नै टेम पर त्यार करणै अर आप कानी स्यूं ग्रंथ-माल खातर सदा गहयोग देवता रहणै को उत्साह बिहारी जी का घणा हितू अर बुजर्ग भायला श्री बिसेसरदयाल जी गुप्ता दिरायो, जीं खातर बांनै घणो-घणो धन्यवाद देऊं हूं।

जाणूं हूं आप लोग पोथी नैं चाव स्यूं अपणास्यो अर इं ग्रंथमाला नैं आगै साह चालू राखणै मे पूरो सहयोग देवता रहस्यो।

सुबोध कुमार अग्रवाल

मंत्री

नगर-श्री, चूरू

चूरू

२५-१०-१९६८

※ भूमिका ※

राजस्थान सूरा, सतियां अर सतां री धरती है । अठै गांव-गाव में अनेक सूरा-पूरा अर सतवादी मिनख उतरया है, जिणां री बाता ई' चालै है । वां री कीरत-कथा जन साधारण रै हिरदै में लिख्योड़ी है ।

राजस्थान रै इतिहास पर समूचो देस गौरव अनुभव करै है अर उण सूं प्रेरणा लेवै है । पण ई' महिमामय इतिहास रो निर्माण ई' धरती रै भाषा-साहित्य सूं ई होयो है, ई' तथ्य कानीं लोगा रो ध्यान हाल-तांई भली-भांत गयो कोनी, जिण री घणी जरुरत है ।

राजस्थानी-साहित्य रा दो अंग है—विद्वाना रो साहित्य अर लोक साहित्य । यां वात खास तौर सूं ध्यान देवण जोग है कै राजस्थानी-साहित्य रा ये दोनूं अंग आपस में घुल्या मिल्या है । ई' तथ्य रो एक प्रकाशमान उदाहरण राजस्थान री बाता है, जिकी निरक्षर किसानां सूं लेयर बडे-वडे विद्वानां री रुचि रो विषय रैयी है अर आज भी या सुरुचि मिटी कोनी । इण सूं पर-गट होवै है कै राजस्थानी प्रजा रो इतिहास-बोध घणो उत्कट है । राजस्थान रा लोग राजवंशां रै धीर बीर नर-नारियां नै तो आप री बातां रा पात्र बणा ई रास्या है, पण सागै ही जन साधा-

रण मांय जठै भी किणी चरित्र में कोई गुण देखो तो उण री साख रा दूहा अथवा वातां भी चाल पड़ी ।

राजस्थान रै प्रत्येक इलाकै में इसो मौखिक साहित्य मिलै है, जिण सूं उण प्रदेस री जनता आप रो समय सरस करै अर सागै ई उण सूं गौरव भी अनुभव करै । इण साहित्य-धारा मांय जिको चरित्र जितरो प्रकाश देवै, उण रो जस-विस्तार भी उतरो ई घणो मिलै । या क्षेत्रीय-इतिहास री सामग्री क्षेत्र-विशेष नैं घणी प्यारी लागै तो कोई अस्वाभाविक वात कोनीं ।

इण चरित्रां मांय छोटा अर वडा दोनूं ई भांत रा मिनख मिलै है । कई व्यक्ति साधारण स्थिति मांय आप री जीवन-लीला संवरण करी पण वै लारलै लोगां पर आप री विशेषतावां री छाप छोडगा अर लोग वां नैं आज भी याद करै है । ये चरित्र इतिहास-ग्रंथा रा पात्र कोनी वण पाया पण प्रदेश-विशेष मांय तो वां नैं वड़ै-वड़ै ऐतिहासिक पात्रां सूं भी घणो अपणेस मिलर्यो है ।

इसै चरित्रां पर पुराणै जमानै रै साहित्य सेवियां रो ध्यान भी गयो है अर वां रै नांव पर अनेक डिंगल-गीत तथा वातां लिखी गई है । साथै ई ये विशिष्ठ व्यक्तित्व गीतां में भी गाया गया है अर यो ई कारण है कै राजस्थान रै लोक साहित्य पर भी इतिहास रो ई गहरो रंग छायोड़ो है । अठै लोक गाथावां पर कथात्मक गीतां री भोत वड़ी महिमा है । जनता ईं साहित्य-सामग्री में सदा सूं पूरो ... ती रैयी है ।

ज्यूं ज्यूं समय आगै चालै, समाज मांय नया-नया चरित्र परगट होवै। इण चरित्रां रो प्रकाश जनता में फैलै अर वातां चालै। वां रो प्रभाव साहित्य सेवियां री लेखनी रो विषय भी बणै।

गद्य साहित्य री अनेक विधावां मांय एक विधा रो नांव 'रेखा चित्र' है। रेखा चित्र मांय किणी विशिष्ट पात्र रो भीतरी अर बाहरी व्यक्तित्व चित्राम ज्यूं स्वाभाविक रूप में मांड्यो जावै अर वो पाठकां रै आगै जीवतो-जागतो सो परगट होवै।

या बात निश्चित है कै जिण पात्रां नै रेखा चित्रां मांय उतारया जावै, वां रो चित्रण उणीज प्रदेश री भाषा मांय करयो जावै तो स्वाभाविकता री रंगत पूरी ओप सागै दीपै। घणी खुशी है कै श्री कुंजविहारी जी आप री रचना मांय जिण प्रदेश रा पात्र लिया है, वां रो चित्रण भी उणीज इलाकै री भाषा माय करयो है। ई साधन सूं विद्वान लेखक आप री रचना रै च्यार चाद लगा दिया है।

लेखक रो ध्यान समाज रै आदर्श चरित्रां री ओर रयो है पण वां रो चित्रण स्वाभाविक शैली मांय होवण सूं ये यथार्थ रंगत रो रस भी देवै है।

प्रस्तुत संग्रह मांय लौकिक-कथानका रो आधार लेयर वां मे कुशल लेखनी सूं नयो रंग भरयो गयो है, जिण स्यूं ये और भी घणा सरस अर रोचक बणग्या है। बानगी देखो:—

१-माथै अर भुजावां पर सिंदूर की मोटी-मोटी लीकां खीची, धोती

की जगां लाल लंगोट कस्यो और खूंटी कै बातै मांय स्यूं आप की पुराणी जरी-किरी कटार काढी। कटार नै सिंदूर स्यूं पोतै, माथै कै लगाय, 'जय भवानी' बोल, गुरूजी घर कै बारै आया। अस्ती साल को डोकरो पच्चीस बरस को काल भैरव बणग्यो, उछलतो-कूदतो आप कै सेठां की हवेली कानी चाल्यो।

(धींगो मुक्कल, पृष्ठ ४)

२– संग चालतो-चालतो डूंगरां कै बीच एक मैदान में पूंच्यो। तम्बू तणग्या, जाजमां बिछगी, दाल-बाट्यां बणै लागी। लुगाई-मोट्यार आप आप कै रंग-ढंग स्यूं इन्नै-उन्नै बैठ्या गल्लां करै। ठाकर लोग आप आप की तरवारयां बदूकां की एक जगां झुंगली सी बणा दी अर कुरला फाकरला में लागग्या। नाथ बाबो भी आपकी चादर बिछा अर मोट सिराणै धर कर बिसराम करै लाग्यो।

(नो मण को नाथ बाबो, पृष्ठ १६)

इण उद्धरणां री भाषा-शैली अभिव्यंजनात्मक अर चित्रात्मक है। साथै ई प्रसाद गुण सूं भी भरी-पूरी है।

इण संग्रह रा चित्र सामाजिक-इतिहास री दृष्टि सूं परमोपयोगी है अर स्थानीय-इतिहास मांय वां रो महत्व रहसी। आज सूं ५०-६० बरस पहली राजस्थान रा तीन सींवजोड़ जिला (चूरू-झुंझणू-सीकर) री जीवन धारा किण रूप मांय बैवती, इण रो खरो विवरण ई बातां मांय बांच्यो जा सकै है। सेठां रो वैभव वांरी उदारता, पंडतां रो ग्यान अर वां री गरिमा, ठाकरां री

चारित्रिक कठोरता अर वां री त्याग शीलता रा अनेक दृष्टांत इण बातां मे परगट होया है अर उण बीतै जमानै रै जीवन-मूल्यां री सूची पेश करै है। इण सार तत्व रै साथै ई जन जीवन रै प्रायः सगळै ई अंगां री भांत-भंतीलो अर रंग रंगीलो चित्रपटी भी ईं बातां मांय सहज ई देखी जा सकै है।

संग्रह रा घणाखरा ई लेख मुण'र मांड्योड़ा संस्मरणात्मक ढा चित्र है। इण चित्रां माय जनता रै अनुभव रो सार समायोड़ो , ई कारण सूं ये लोक साहित्य री सामग्री सा भी लागै है अर णीज भांत सरलता तथा स्वाभाविकता सूं भी भर्या-पूरा है।

आशा है जनता ईं संग्रह नै घणै हेत अर सनमान सूं अपणैसी रैर आपरै समय नै सरस बणासी अर साथै ई इण सूं प्रेरणा भी ग्रहण करसी। इसै सुन्दर अर रोचक प्रकाशन खातर नगर-श्री चूरू, रै साधनाशील कार्य कर्तावां रो प्रयास सराहना जोग है। एक दिवंगत साहित्यकार री रचना रो इतरो सोवणो अर सुरंगो प्रकाशन कर संस्था आपरै पुनीत कर्तव्य री अभिनन्दनीय पूर्ति करी है।

बिसाऊ
दीपावली, २०२५ वि०

डा० मनोहर शर्मा
सम्पादक 'वरदा'

धींसो सुक्कल

आण पर अड़णै वाला, मोत में भिडणै वाला मिनखां की बातां चालै, जद रामगढ़ के धीमै सुक्कल को नाव आगै आये बिना कोनी रैवै। सीकर राज में कदेई यो रामगढ़ कई बातां में आप कै सरीखो एक ही हो। राव राजाजी का धरमेला राधाकिसन जी पोद्दार ई नगरी में सगली बातां सामरथ हा। पट्टा पोलो तो बां की बैठक में बण्या ई करता, सुणनै में आवै है, काठ-कोरडो भी सेठा के हाथ में हो। इस तरियां पोद्दार, रूइया, खेमका वगेरा कई घराणा हा, जिनां के पुन-परताप सेती यो नगर सेठाणू तो बाज्या ही करतो, सागै सागै लिछमी की भैण सुरसती भी अठै बरसां ताईं आसण जमा कर बैठी, जिकै स्यूं रामगढ सेखावाटी की कासी भी कुहाया करतो।

धींमाराम जी सुक्कल खेमका सेठां………………के अठै बरणी-पाठ में ले कर मुनीमाई तांणी, सगलो काम सभाल्या करता। सिजूरचा की चाव्यां आं कै ही हाथ रैवती। विदवानां में विदवान, भलां में भला, पण अडज्यावती जठै पूरा परसराम ही हा। एक बार कोई बात नै लेकर आप नाऊं सैठै घड़ै के धणी स्यूं सुक्कलजी भिड बैठ्या। सचाई को साथ देवतां कोई सिर काटै तो धींसो पाछा पग कोनी देवै। दब कर कित्ता दिन जीवाणा, या सोच कर छुरी-कटारी स्यूं लैस होकर, बाप-बेटो दोन्यूं घर स्यूं निकल्

पड़्या अर नमस्कार कर बोल्या, "स्यामनै आज्यावो"। बाप बेटो दोन्यूं झूझण लाग्या, संजोग की बात, शुक्लजी की फेट में उनां को बेटो ही आ पड़्यो। होश बिना के जोश में शुक्ल जी बेटै ने चीर गेर्यो। कालजै के ई गहरै घाव ने तो बै कदेई कोनी दिखायो, पण ई झगड़ै में माथै ऊपर लागेड़ी लाम्बी लाम्बी लीकां देखणियां मोकला मिनख आज तांई जीवै है।

एक वन में दो सिंघ मावै कोनी र्हणं नर्क, या बात कही जावै है, स्यात् ई भावना नै लेकर ही कदे पोद्दारां अर खेमकां में तणा-तणी होगी ही। आपको पासो हीणो देखकर, खेमका आपको घर ढक कर रामगढ़ स्यूं समन्दु दिसावर चल्या गया। दिसावर में रैवतां थकां बरसां का बरस बीतग्या। बूढ़ा बडेरा घणाखरा रामजी का प्यारा होग्या। उनां के बेटां पोतां का ब्याह-सावा भी बठै ई होया। नई पीढ़ी बड़ी भारी होगी। बडिया जी बतावता के देस मांय रामगढ़ आपणो गाँव है, बठै आपणा हेली-नोहरा है, जमीन जायदाद है, जद टाबरां के भी मन में आवती, 'क आपां भी देस चालां, बडेरां की भोम देखां। पण तीसां पैंतीसां बरस गुजरग्या, बठै आपां ने अब कुण जाणै है? या सोच कर मन ओटो कर लेवता।

पण दाणै-पाणी की बात, एक बाई की सगाई को संजोग देस कानी ही बणग्यो, ब्याह भी देस में करणै की पक्की थक्की होगी, खेमका पूरै परवार समेत बाई को ब्याह करणै वास्तै रामगढ़ ...। पुराणै सेठां के बेटां पोतां ने आया देख कर गांव का लोग

राजी होया। ब्याह की त्यारियां होवण लागगी, पण पुराणी रगस नैं लेय कर पोद्दारा नैं सेमकां को आवणो सुहायो कोनी। दोनूं सेठां का घर एक गली में पड़ै। पोद्दार सेठ आपकै ठाकरां के हाथ सेमकां की हवेली में कुहायो, म्हारी हवेली के आगै ई गली में गीत नात, जान-बरात को रोलो, बैंदो होवैगो तो कोई बडी हो ज्यावैगो, कोई काम करो जिको सोच समझ कर करियो।

सेमका बीतेड़ी बात नैं तो भूल्या ही कोनी, या नई खबदी और सड़ी होगी। छोरी को ब्याह करां कै झगड़ो करां। बार बार की धमकियां स्यूं घबरा कर यो ही मनसूबो कर लियो 'क पाछा ही चालो। गांव में चर्चा चाल पड़ी—सेमका पाछा जावै है। जित्ता मूंह, उत्ती बात। घीसाराम मुकुल के कानां में भी भनकार गई। पस्सी बरसां को डोकरो आप की मुट्ठी में पड़यो हो। बात नैं मावल सुणी, समझी। विचारण लाग्यो, कोई मिनख आप के घर में आप की बेटी को ब्याह न करै? गीत नहीं गावै? जान गली में नहीं आवै? या कठै की रीत? घीसाराम के ठंडै खून में गरमी आवै लागी। मायेड़ो नमक चेत्यो, अन्याय को मुकालबो करण नैं शेवरो नाट स्यूं सड़यो होग्यो।

मुकुल म्हाराज आप कै सेठां की हवेली आयो, देख्यो बींटा ताण्या बंध रैया है, उदासी छा गई है। आंगण में खड़यो होयो दर रैंने दिनां की एक एक बात याद आवण लागी। आंसू चालग्या, पण धीमे म्हाराज नैं बडै धुण बतलावै, मारा नया ही नया। म्हाला देखणिया बीमां जगा सड़्या बैठ्या हा।

आगे ने पीछे [illegible] सेठाणी की निजर पड़ी । थाने मैं [illegible] पड़ी । सीतारामजी बडिया ने साथ लेकर असनाई आसीस देई । या बात देख कर घर का सारा [illegible] पड्या । सुकुल जी की आन्खां ममता स्यूं भर [illegible] बाई आंतड़ियां में राखी पाळी छै, सेठ [illegible] कायदो [illegible] ? एक एक बात के सागै [illegible] आंसू भी आवै लागी ।

सुकुलजी बोल्या सेठाणी बाई, मैं थारी बात सुणली है। या बात भी देख ल्यो हूं 'क थे पाछा जाणो की त्यारी करो हो, पण मेरी भी एक बात सुणल्यो । चौमिये सुकुल के जीवतां थकां थे या बात क्यूं सोची 'क म्हे एकला हां ? बाई को ब्याह अठै ई होवैगो, ठाठ बाट से होवैगो ! ब्याह की त्यारी बेबूझ करो।

बीटा पाछा खुलग्या, हलदात की त्यारियां होवै लागी। दूजे दिन सुकुलजी सुदियां ही उठ्या, न्हाया धोया, दो राम का नाम लिया । माथै और भुजावां पर सिन्दूर की मोटी मोटी लीकां खींची, धोती की जगां लाल लंगोट कस्यो और खुट्टी के बातै मांय स्यूं आप की पुराणी जरी-खिरी कटार काढ़ी । कटार नै सिन्दूर स्यूं पोत, माथै के लगाय, 'जय भवानी' बोल, सुकुलजी घर के बारै आयां । लारला सुख दुःख याद आया । अस्सी साल को डोकरो पच्चीस बरस को काल-भैरव बणग्यो, उछलतो कूदतो आप कै सेठां की हवेली कानी चाल्यो । आगै आगै काल-भैरव सुकुल अर लारै गाँव । जलूस सेठां की गली में आकर रुक्यो । आगै काठ

गांरहू के धण्यां का ठाकर जच्या बैठ्या हा । धीसै म्हाराज को विकराल रूप देख कर एक कानी खड़्या होग्या । काल भैरव पोद्दार की हवेली के आगे खड्यो होय कर जोर सै हेलो मारयो, ...सेठ की पोती के ब्याह का गीत गावती सेठाणियां अठै मर आई है, कोई रोकणियो होवै तो आज्यावो............ । एक बर, दो बर, तीन बर हेलो मार कर सुकुलजी गली के ई नाकै स्यूं बी नाकै ताईं नागी कटार लियां चक्कर लगावै, मरण मारण नै कमर कस राखी, पण मिनख जद मरणो धार लेवै तो मौत भी विनाती काट ज्यावै । आखो गाँव भेलो होग्यो ।

गाँव का धणी बैठक की मोरयां मांय स्यूं देखण लाग रेया हा । जाणै हा, बामण मर भलां ई जायो, मानैगो नहीं, सागै गाँव की भायला को भी डर लाग्यो । सेठां नै मोरी में खड्या देख कर सुकुल सैर जोर स्यूं धाड्यो, सेठां, धीसियो सुकुल त्यार है, थारै ठाकरां नै हुकम द्यो......... ।

सेठ बात नै विचारी, बैठक स्यूं बारै आया अर सुक्कलजी को हाथ पकड़ कर आप की बैठक में लेग्या । सेठजी सुकुलजी नै ठंडा-मीठा करया अर बोल्या, थारो ई पोती को ब्याह धणै उछाव स्यूं करो, ब्याह को सारो मैचार मैं मेरै हाथ स्यूं करस्यूं । ठाई को डोको डीग नै फाड़ै । धीसै सुकुल की भवानी के परताप स्यूं ब्याह का सारा नेगचार पोद्दारजी के हाथां स्यूं होया । धन पर मरणं वाला, मौत स्यूं भिड़णं वाला धीसै सुकुल की बात तांई बातों ई चालै है ।

सेवक भक्त स्वामी

(पिताजी बीस बरसां तांणी रामगढ़ में रैया हा, क्यूं देखेड़ी, क्यूं सुणेड़ी मोकली बातां बांकै याद ही। काली माई (चूरू) के मंदर मांय पुजारी बण्या, सेठ सोभारामजी की उण पर गहरी सरदा ही। सरीर ठीक न रहणै के कारण काम छोड़णै के उपरांत भी वै जीया जित्तै सेठजी वां नै पूरी तनखा देता रैया। ई परसंग नै ले कर एक दिन पिताजी मनै रामगढ़ की एक बात कैई, जिकी नीचै लिखी जावै है–)

रामगढ़ में रूइयां को घराणो घणो नांव जादक रैयो है। धन अर धरम दोन्यां स्यूं भरयो पूरयो। सेठाई की धाई गाजती। सेठां की हवेली मांय घणाई नोकर-चाकर, ठाकर, जमादार, पंडित पुजारी अर मुनीम गुमास्ता रैवता। ढ़ाकास कानी को एक ठाकर भी टाबर थको आं हवेलियां में रैवतो आ रैयो हो। नई पीढी तो ठाकरां के आगै ही जामी ही। जिकै बाबू की ये ठाकर हवेली रुखालता, बो तो आँ के हाथां में ही जाम्यो हो, टाबर पणै में बो ठाकर बाबै कन्नै ई सोवतो, बांकै सागै ही जीमतो, बजार जावै तो गोदी में, घरां आवै तो खवै पर।

बाबू तो ठाकर नै बाबो ही मानतो, माइत की ज्यूं ही राखतो, पण पराई जाई, बाहर सें आई बीनणी ई बात नै के जाणै?

वी कै भावै तो और नोकर हा जिसो ठाकर हो । बाबू का पोतडा तो बाबो आपके हाथां धोया होसी, पण बीनणी जी ने घी मांयला घेवर कद खुआया हा ? ठाकर के एक बेटी ही, ब्याई थ्याई । अब तो ठाकरा को डेरो सेठा की हवेली मे ही थो, अठै ई कासी, अठै ई काबो । दिना नै जातां के दार ? ठाकर सत्तर से ऊपर टिपग्या, जिरधा ठिरचा रैवै लाग्या । हालणैं चालणैं की हिम्मत कोनी रैई तो पोली मे माचो घाल्या सूत्या रैवता । बीमार अर बूढो आदमी जठै पड्यो रैवै, बठै ही थुकै, कुरला करै । बीनणीजी नै यो सूगल-वाड़ो सुहायो कोनी । दूसरै नौकर स्यूं कुहायो 'क बाबोजी ने कहदे-आपणों घोडा हालै नोहरै मे आपकी खाट घाल लेवै, बठै आराम रहसी, पोली मे सारै दिन आवां जावां । नोकर ठाकरां नै कैई, होलै होलै दुलक चालो, मै नोहरै मे घाल्याऊ, बठै ई रोटी पूंच ज्यासी ।

ठाकर कोई टाबर तो हो कोनी, नाडग्यो । सोचण लाग्यो, ई पोली की रूखाली मे जिनगानी गालदी, इब हाण थकया तो घोडा हाल नोहरै मे चालो । साचो कैई है, बाणियो मीत न बेसा सती ।

डोकरै आप की डांगडी संभाली अर गिरतो पड़तो पेडिया उतरग्यो । बालापण मे छोडेडी, बिसरायेड़ी आप की जलम भोम याद आई । जिया तिया चाल कर बजार के चोपटै आयो, सोच्यो कोई गांव को ऊंटियो मिलग्या तो बी पर पड़ कर गांव को नाको लेलेऊं । आज ठाकर नै कई बातां का घोला आवै है ।

जिसे बात [illegible] पाया । गांवों में मांचो गाली देख कर नोकर ने पूछ्यो । कुणसो जिम्यो, म्हारा नोहरे काली गया होवेगा । बाबू बोल्या, अरे भाई ? मैं तो बंदजी ने हवेली आवण खातर कियो है, जा अभी बुला कर ल्या । नोकर ने देखी हो के ठाकर नोहरे में नहीं है, ई खातर सीधो बाजार काली गयो। ठाकर चोपटे पर बैठ्या होवेला । नोकर हवेली चालणे की बात कही तो ठाकर बोल्यो, ना भई अब तो एक बर गांव ई जास्यां । बाबू नै कह देई, होळी करणे की आवण होसी तो ओजूं आज्यांस्यूं ।

नोकर हवेली आ कर बाबू नं सुणी जिसी सारी बात कह दी । बाबू के मन में बड़ो विच्चार आयो, या कियां होई ? ये लोग बावै न क्युई कह तो नहीं दियो है ? बीनणी क्युई उतावली सी बोली-जी म्हे तो क्युई कैयो नी, इत्ती बात तो ई के हाथ जहर कुहाई ही के पोलो मांय कर सारै दिन आवां जावां, ई खातर थांनै नोहरे में घलादयां, बठै आराम पास्यो । पण ठाकरां में तो ठसको घणो, इत्ती सी बात पर ही गांव के गेले पर जा बैठ्या ।

बाबू के सारी बात समझ में आ'गी । कुड़तो पाछो पैर्यो, पगड़ी सिर पर धरी अरै उतावला सा बारै नीकल्या । बावै कन्नै जाय कर वां के सारै सी नीचै धरती पर बैठग्या । पूछ्यो, गांव जावो हो के ? बाबो भर्यो बैठ्यो हो, बोल्यो कोनी गयो । बाबू की बोली भी भारी हो'गी । बोल्या, "उठो, घरां चालो ।" बाबो गोडां में गडेड़ो आप को सिर ऊंचो उठायो, लाल लाल आंख्यां में आज पैली बार आंसू आया हा, क्युंई लाचारी का, क्युंई अपणायत

"बोलो, के मनस्या है ?" ठाकर उणनै दियो, मनस्या याही है के तेरे हाथां में अब नव्यो जाऊ। आप रो हाथ बाबू के हाथ ऊपर मेल कर ठाकर विनय पड़्यो।

मुड़ कर देख्यो जिनाणी नहीं बीनणी पगां भली है। ठाकर बोल्यो, जा बेटी, भाय न जीमणा परोस अर मने भी थोड़ो सो दलियो करदे। बाबू बीच में ही मुलक कर बोल्या, दलियो बेगी सी कर दे, बाद में गाव जाणो है। बाबू की बात सुण कर आंगणो हंसण लागग्यो, खंभा नाचणा लागग्या।

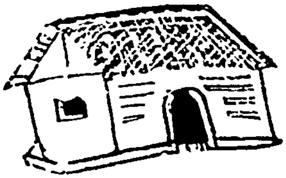

वैजू वावू की वात

रामगढ के रुडया सेठ हरनन्दराय जी के बेटां की मुखिया गद्दी मुम्बई मे ही। मुम्बई मे वडै घरा की रीत मुजब वाडी मे ही ठाकुर वाडो भी होया करती। हरनन्दरायजी का बेटा वैजनाथ बाबू की वाड़ी के ऊपरलै माल मे ठाकुर-वाडो घणै चावस्यू वणायेडो हो। पिताजी कैया करता, ठाकुरजी के सिघासण मे साचा हीरा जडेडा हा, धार्मिक घराणू हो, लिछमी की पूरी किरपा ही। पडत ·········ई ठाकुर वाडी का पुजारी हा, वाडी मे सै कोई वा नै बाबोजी कैवता। बाबू बैजनाथजी तो आं के हाथा मे ही जाम्या हा। विद्या, बुद्धि अर सरल सुभावके कारणै पडतजी को पूरो मान तान हो। सेठां के टाबरां का सगाई ब्याह आं की सल्ला स्यू होता, पंडितजी आपकी घणाखरी ऊमर ई घर मे गाली ही।

बैजनाथ बाबू की बीनणी ठाकुरजी का दरसण करण नै रोजीना नेम स्यूं ऊपर जावती, पण मोड़ो घणो कर देवती। बूढा पंडतजी अडीकता अड़ीकता थाकता हो ज्यावता। एक दिन बीनणी जी श्रौर भी देरी स्यू पूग्या तो पंडतजी बीनणी नै धीरै सी समभा कर कही 'क थोडा सुदिनां दरसण कर लिया करो तो ठीक रैवै, पण बीनणीजी दोरो मानग्या। मन मे सोच्यो, ठाकुरजी म्हारा, म्हे ठाकुरजी का, जद जद आवां,ऐ पोलमों देणिया कुण?बीनणी-जी आगलै दिन दरसण करण नै कोनी गया। पुजारीजो भगवान

को चरणामृत लीनें ल्याया तो बीनणी पीढ़े पर बैठी ही मोड़ो मूंह करयां, आडै हाथ स्यूं चरणामृत नै लियो।

पंडतजी मन में विचारयो 'क अब अठै म्हारां में भद्रक नहीं है, कैयो भी है, "शील हीन जब देखिये, तुरत कीजिए कूच"। पंडत जी आपकी धोती गमछो कागद में दाब्यो अर रसोइये म्हाराज नै ठाकुरजी के भोग लगावण की कह कर बाड़ी स्यूं बारै निकल ग्या।

बाबू बैजनाथजी गद्दी से बाड़ी आया। सदां की ज्यूं कपड़ा बदल कर जीमण नै चाल्या। आं के नेम हो 'क ठाकुरजी को परसाद लेकर ही जीमता। एक बाजोट पर आप, अर सारै ही दूसरी पर पुजारी जी जीमता। पण आज पुजारी जी दीख्या ई कोनी। तपास करणै पर बाबू नै सारी बात की ठा पडी तो बिना क्यूं ई कैये सुणे ही खूंटी ताण कर सोग्या। बीनणी भी के करै ? वणी को सुभाव चोखी तरियां जाणै ही। आप कुमाया कामड़ा, कीं नै दीजे दोष !

मालिक जद घर में भूखो सूत्यो, जद दूसरा किस तरियां जीमै ? मुनीम गुमास्ता आया, जीमणै को आग्रह घणो ई करयो, पण बाबू को एक ही जवाब हो, बाबो कैंठै ई भूखो बैठ्यो है, बीं नै ढूंढ कर ल्यावो। दुःख स्यूं बाबू की आंख्यां लाल, अर बोली भारी होगी। भाग दौड़ सरु होई, पण मुम्बई जियाल की महा नगरी में यूं के पत्तो चालै ? आखर दिन छिपतां एक मुनीम नै समदर के पुजारी जी संध्या करता दीख पड़्या। मुनीम-

जो हाथ जोड़ कर पंडतजी नै सारी बात सुणाई, घर में पूरो तमियो हो रैयो है। पंडतजी को मन तो मोम हो, आंच लागतांई पघलग्यो। झट देसी आपको आसण समेट कर कांख मे लगायो अर मुनीमजी के सागै हो लिया

रोही स्यू आयेडी गाय जियां आपके वाछडिये कानी चालै, जियां ही पुजारीजी सीधा बाबू के कमरै कानी गया। ब्याह आस्यां में च्यार च्यार धारा चाल पड़ी। पुजारी जी बाबू को हाथ पकड़ कर बोल्या, चाल जीम। बैंजनाथजी उठकर आगण मे आया, मूढे पर आप बैठग्या अर आप के स्यामनै एक चोकी पर पुजारी जी नै बैठा कर बोल्या. एक बात पूछू ? पुजारी जी भरे गलै स्यू बोल्या, हां पूछ। बैजनाथजी पूछ्यो, "मेरी सगाई खातर कन्या ढूंढण नै सेठ गया हा 'क थे गया हा ?"

"मैं ही गयो हो।"

"मेरी मां थानै लड़की के बारै में पूछ्यो जद थे के कैयो हो ? याद होवै तो बताओ। मैं जद लैरनै ही खड़यो हो।"

"या ही कैई ही 'क लड़की के है, लिछमी को रूप है, घणी सोवणी सरूप है, स्याणी है अर सुशील है।"

"जद थानै या बात मानणी चायै 'क थारै कहणै से, सगाणै मैं, मेरा मा-बाप ई लिछमी नै मेरै पल्लै बांधी।"

पुजारीजी नै उथलो कोनी आयो, जद बाबू फेरूं बोल्या, "बरूंजी, अब या लिछमी मोटो मूंडो करयो जद थे घर छोड कर क्यां भाग्या ? ई घणी सायर सरूप लिछमी नै पडै त्याग कर गलत्या

को श्री गणेश तो आप करो अर भूख मरणै को भागी मैं बणूं ? ओलमों तो मैं आपनै देवनो 'क किसीक सुशील, स्याणी……।"

जरा सी जल्द बाजी के कारणै गरू को सिर चेलै के स्यामनै झुकतो जावै हो. मुनीम गुमास्ता सारा चित्राम होया खड़्या हा, खंभै ओलै बीनणी की सुबकियां सुणी तो पुजारी बाबो हल्वाँ सी उठ्या, बीनणी के सिर पर हाथ फेरचो अर लाड स्यूं बोल्या, जा बेटी, थाल परोस, ठाकुरजी के भोग लगावां।

नौ मरा को नाथ बाबो

—※※—

रामगढ़ का सेठ आपकै पूरै अमलै नमलै सुधा नाथ दुआरै की जात्रा पर जा रैया हा। रामगढ़ नो नामिक सेठाणी रैयो है। दूर दूर तांई का लोग जाणता, सेठ चालै तो लिछमी भी सागै ई चालै। जात्रा में सेठा के सागै दस ही बन्दूक तलवार धागे ठाकर, मोकला नोकर चाकर, रसोया, नाई वगैरा। मुनीम लोग अगाऊ बंदोबस्त में लाग रैया। रथ, बंली, ऊंट-पूरो लवाजमो, घर कूंचा घर मजला वगै।

बूंदिये का नाथजी म्हाराज भी नाथ दुआरै की जात्रा पर जा रैया हा। नांव तो वांको स्यात् गोरखनाथ हो, पण डील का भोत भारी हा, पिताजी कैया करता 'क नाथजी में नौमण वजन हो, स्यात ई खातर ही लोग वांनै "नौ मण को नाथ बावो" कैवता। भारी भीमकाय, लाल चट्ट, लंगोट कस्या, हाथ में भाड़ी को मोटो मोटो, अर कान में माला मणियां की भोली लिया नाथ बावो भी रस्तै में सेठा कै सागै होग्या।

एक जगां रैवणियां मिनख स्यात् बारा बरस सागै रह कर भी आपसरी में कोनी बोलै बतलावै, पण परदेस में बेई आदमियां में भट अपणापो आज्यावै, सुख दुःख का साथी बण ज्यावै। सेठ को अर फक्कड़ को के जोड़ो ? पण रात दिन की बोल बतलावण स्यूं मनां में ममता पैदा होगी। तम्बुआं नै डोवणै स्नान बठीनै के

ही एक राजपूत को ऊंट भाड़ै करेड़ो हो, बो गैला घाटा भी जाणै हो। गरीबड़ियो सो राजपूत आपकी बोदी सी तलवारड़ी लियां ठेठ स्यूं ई भाड़ै पर चाल्यो आग्यो हो।

संग चालतो चालतो डूंगरां के बीच एक मैदान में पूंच्यो। तम्बू तणग्या, जाजमां बिछगी, दाल-बाट्यां बणै लागी। लुगाई मोट्यार आप आप के रंग ढंग स्यूं इन्नै उन्नै बैठ्या गल्लां करै। ठाकर लोग आप आपकी तरवार्‌यां बन्दूकां की एक जगां भुंगली सी बणादी अर कुरला फाकरला में लागग्या। नाथ बाबो भी आपकी चादर बिछा अर मोट सिराणै धरकर बिसराम करे लाग्यो।

इतणै में एक ओपरो आदमी चिलम हाथ में लियां खीरो लेवण नै डेरै में आयो। साधारण सी बात ही कुण ध्यान देवै हो? पण बो मिलख मौको पावताई बन्दूख अर तरवारां की भुंगली पर ताचक कर पड़्यो अर सारी की सारी बन्दूखां तरवाराँ की बांथ भर कर हिरण होग्यो। अररर……बो जा, बो जा होई, पण बींकै लैर कोई भाग्यो कोनी, सारा जणा ही खाली हाथाँ हा। जरा सी देर में ई स्यामनै भाड़ाँ मांय स्यूं दसां ई तगड़ा २ जुवान हाथां में बन्दूखां ताण्यां बठै आ ऊभा होया।

सूत्यां की पाडा जणगी, अब के होवै ? बै लोग सेठां के ठाकरां नै लैण स्यूं सुवा कर बां कै उपर गाभो उढ़ा दियो। बन्दूखां की नाल बां कै सिरां कानी कर कै, दो आदमी खड़्या होग्या, हाल्यानीं अर गोली मांय कर काढ़ीनीं। धाड़व्यां नै मिटाई ; सेठाण्यां नै चपक चपक चूंटली, बाकी का लोग सारा एक

कानी बैठ्या, कोई साम ई कोनी काढे । नाथ बाबो भी बोल वालो बैठ्यो देखे ।

एक बाई के पगां में सेकडो भर चांदी की साट ही, डाकू गेज लिया, पण कडी नीसरी कोनी । देर लागती देखकर एक बोल्यो, "न नीकले तो राड को खुरडो काट कर काढ ले ।" दूसर भट तरवार काढी । डर के मारे बिच्यारी वार घाली । वा नाथजी कानी देखकर कूकी, बाबा, मेरो पग काटे है । तरवार स्यूं नलो कटती देखकर बडे सें सूरमा का होस हिरण हो ज्यावे, वा तो बिच्यारी लुगाई की जात ही । डाकू आपकी तरवार उठावे ई हो 'क लेरई नाके स्यू एक गरजनाभी होई, "अब नही सेयो जावगो"। भीम काय नाथ बाबो बाघ की ज्यूं ऊछल्यो अर आपको सोट घुमाकर तरवारिये के भौडे पर दे मारयो, बो तो बठेई ढेर होग्यो । अब बाबो आपको सोट जोर स्यू घुमाणो सरू करयो, जठे पडे मूसल, बठेई खेम कुसल । तीन च्यार बठेई लाम्बा होग्या । बाबे नें मच्यो देखकर वो भाडेती राजपूत भी आपकी बोदी सी तरवार सूंत कर रण क्षेत्र में कूद पडयो । बात की बात मे पासो ई पलट ग्यो । बन्दूकां पडी रेगी, तरवारा धरी रेंगी । डाकू मरया जिका मरया बाकी का बोजां पग देग्या ।

अब ठाकर लोग बैठ्या होया, भाग्या अर लूक्या जिका भी आकर भेला होग्या । सेठ आपको हीरा जड हार उठा कर बाबे के गले मे घालणो चायो, पण बाबो पांच पांवड़ा ओटो सरक कर बोल्यो, सेठजी ई देणो है तो ई गरीब राजपूत नें दे जिको

आठ आना रोजीना के भाड़ै ऊपर आयो. पण आपकी ज्यान त्याग कर लड़्यो, ई का तो लुगाई टाबर रुल ज्याता । म्हारो के म्हे तो फक्कड़ हां ।

तुळसीरामजी म्हाराज

रामगढ़ की वातां कैयां ही जाओ, नवेड़ आवै ही कोनी । ईं भोम को किस्योक ऊदो जाग्यो हो,किस्याक किस्याक दानी, मानी अर ज्ञानी पुरष अठै पैदा होया, आय कर वस्या । हस जियां मानसरोवर पर आवणो चावै बियां बडा बडा सन्त महात्मा भी ईं नगरी में दूर दूर स्यूं निवास करण नैं आवता ई रैंवता तुलसीराम जी म्हाराज भी वां हंसां मांय स्यूं एक हंस हा, हम के परम हंस हा । लिछमी कै रमभोल में रहकर भी लिछमी नै आपके अडणैं कोनी दी ।

सेठ हरनन्दराय रूइया रामगढ़ का राजा जिनक हा । भरयो भंडार, पूरो परवार, पण सेठ पाणी में पोयण की ज्यूं एक दम निरलेप हा । बैली मे बैठकर आपकी हवेली स्यूं नोहरै जावता जद टाबरिया, "दो रिपिया बावाजी, दो रिपिया " कैवता गैल हो ज्याता । सेठ हांसता २ एक आंगली उठाकर कैवता,"एक रिपियो"। टाबरां को मतलब हो तो 'क बाबोजी की अिरमपुरी मे दिछणा का दो रिपिया मिलैगा, पण सेठजी को कहणो थो- एक रिपियो मिलैगो । किस्याक भद्रीक मिनख हा ।

सेठ आपको ज्ञान ध्यान निरवाला नोहरै में ही करया करता । बठै ही आपकै वास्तै पांच खण्डी चन्नण मंगवा कर धर राख्यो हो,

अन्तेष्टी में जरूरत पड़ैगी । सेठाणी जी ईं बात स्यूं नाराज रैंवता, यो के मूण काढ्यो. जीवता थकां ईं कोई मुसाण मंगाया करै है के ? थान्नी सागर सेठ होर्न भी कहता—थे थारा मूण चोखा राखो, आखर म्हानैं तो ईं काठ में ही जाणो है ।

तुलसीरामजी म्हाराज आं सेठां कै कनै रैंवता । सबेरै संज्या ज्ञान चर्चा होती । दोपारां की टेम में म्हाराजजी संस्कृत पाठसाला (छंतरियां में)पढ़ावता । पचासां विद्यार्थी बठैई रैंवता, बठैई जीमता। सेठां की तरफ स्यूं पूरो बदोबस्त हो । इसी कई पाठसाला चाल्या करती । न तो शिक्षा विभाग हो अर न हजारां अफसर हा, तो भी बडे बडे विदवाना स्यूं देस भरयो रैंवतो । त्यागी गरू, अनुरागी सिष मिल ज्यावै जद ज्ञान गैल गैल फिरै । म्हाराज जी सेठां का ग्यांन गरू ई कोनी हा, घर बिद की सारी बातां का भेदू भी हा । हर काम में वां की सल्ला ली जाया करती । सेठ जाणता, आं स्यूं बुरो बिगाड़ कदेई नई होवैगो, होवैगो तो भलो ई होवैगो ।

एक बार लुगायाँ की खट पट स्यूं बेटां में न्यारा होवण की नोबत आ'गी । सेठाणी बार बार सेठजी नै कैवै, पण सेठ ई जंजाल में क्यूं पड़ै ? करणियां धरणियाँ आपै ई आप आपकी नमेड़ो । सेठाणी जादा कैयौ जद एक दिन सेठ बोल्या, तुलसीरामजी म्हाराज नै कहदयो, बै बांटा-बूंटी कर देसी । या बात बडोड़ी बीनणी के जची कोनी । बोल पड़ी, तुलसीरामजी आपणै घर की के जाणै ? बै किसै दिन हीरा-जुंवारात मुलाया हा, हेली नोहरा ्राया हा ? ये तो आपणै अठै ई बडा सांरा हो रैया है, आगै

[redacted]

[redacted]

म्हाराजजी वठैई विराजग्या । कैयो जावै है 'क वठै बैठ्यां बैठ्यां ई ब्रह्मरन्ध्र स्यूं उनां का प्राण प्रस्थान कर ग्या । चमत्कार दिखा कर महात्मा परमात्मा मे जा मिल्या ।

बिदवान सगलै ई पूज्या जावै है, ईं बात नै दुनिया देखी अर आज ताणी बातां ईं चालै है ।

राम रतन जी डागै की बात

[सदां की ज्यूं एक दिन पं० नन्दकिशोर जी व्यास (फक्कड़ बाबो) नगर-श्री में पधार्या, म्हे बठै ३-४ जणां पैली स्यूं मौजूद हा। फक्कड़ बाबै स्यूं बीकानेरी लहजे में बात सुणन को म्हारो मन कर ही बोकरै। गट्टू बाबै, कुचियै काकै जिस्या महामहिमां री बातां के सागै सेठ रामरतनजी डागै को भी प्रसंग चाल पड़्यो। सेठां की कोमल बिरती, भायां-भायां की गहरी ममता कैवतां-कैवतां बाबो गलगलो होग्यो, म्हे सुणनियां भी चित्राम का……। बात कालजै मांय स्यूं निकली अर कालजै में ही बैठगी। इच्छा होई लिखां, पण बाबै की कैणे गत तो न्यारी ही है।]

बंसीलाल अबीरचंद फारम देस दिसावरां मांय भोत ही मानीजतो फारम है। अबीरचन्दजी का छोटा भाई बाबू रामरतनजी डागा ईं परवार का परभाते नाम लेवण लायक मिनख हा। बीकानेर नैं देख कर धारा नगरी को ध्यान हो आवतो, जठै राजा भोज अर बींकी सभा का नोरतन होया करता।

अबीरचंदजी अर रामरतन जी की जोड़ी राम-लिछमण की सी ही। भाई-भाई सागै ई रैंवता, सागै ही जीमता। फारम

को काम मोकली जगां हो, पण रामरतनजी कदे काम सम्हालन नै दिसावर कोनी जाता । अबीरचंदजी चावता हा 'क भाई आराम स्यूं घर पर ही रवै. म्हारै थका ईंकै ऊपर कंई तरह को बोझ क्यू पड़ै? नगर में सेठ घूमण निकलता अर कंई घर मे ब्याह सावो या खरच कावो होतो देखता जणा ओलै ही बेरो पड़ावता 'क ई भाई कै कंई रकम की कठिनाई तो नई है । जरूरत समझता तो आपै ई मुनीम के हाथ जरूरत पूरी करवा देता । गद्दी मे बैठ्या होवो, चाहे पूजा करता होवो जद भी कोई याचक आ ज्यावतो तो हाथ को उत्तर ही देवता, अर ईनै वै भगवान सकर को हुकम मानता ।

एक बार सेठ आपकी कोटड़ी (नोहरो) मे सवेरै की टेम तेल मालिस करावै हा । एक बिरामण कै बेटी को ब्याह थो जिको वो ब्याह खातर पीसा भेला करण नै नीकल्यो । सेठां कन्नै भी पूच्यो । कागद कलम कन्नै क्युईं हा कोनी, एक ठीकरी पर कोयलै स्यूं १) मांड कर बिरामण नै ठीकरी देदी अर कंयो 'क मुनीमजी कन्नै जा कर ले लेवो । मुनीमजी देख्यो भिखमंगो है, सो आपकी बाण बरती अर बिरामण नै अठन्नी देकर टालणो चायो । बिरामण पाछो सेठा कन्नै गयो, सेठ १ पर ० चढा कर१० रिपिया लिख दिया, पण मुनीम मान्यो कोनी । बामण फेरूं सेठां कन्नै गयो, सेठ एक बिन्दी और चढ़ादी । एकै ऊपर बिन्दिया चढती गई अर सख्या दस हजार पर पूगगी, जद मुनीमजी कन्नै बैठ्यो एक स्याणो आदमी कंई 'क मुनीमजी इबकै बिरामण नै पाछो भेजोगा तो रिपिया पूरा १ लाख देवणा पड़ैगा, अभी क्युं ई देवो नी ? बात

मुनीम [illegible] इस प्रकार विगमण नै [illegible] ।

सेठ [illegible] गंगाजल, गोपी संकर के मन्दर में [illegible] आधा [illegible] के हवेली श्रावता, हवेली पर याचक लोग [illegible] होता जिकां नै वे दानपुन्न देकर जीमता।

मुनीमजी के पेट में आज गलबलो चाल रैयोहो, जाणें हा आज नोकरी जासी। रामरतनजी भी ईं बात नै लखग्या अर मुनीमजी नै धीरज देवता मुलक कर बोल्या, मुनीमजी डरोमत, संकर भगवान को यांही हुकम हो।

कासमीरी तूस

जिका मिनख आप की सारी जिनगानी मिनखा चारै क्यूं गुजारै, वां की जिनगानी में एक दो नईं, मोकळा बाता इसी निर जिसी बाता की बाता हूँ चालै। सेठ रामरतनजी डागा की भी इसी घणी बातां है, एक बात ऊपर देई है, दूसरी नीचे देई जावे है—

सियाळे का दिन हा, ठंडार पड़ै, धूजणी छूटै। सेठ रामरतनजी आप की बैठक में कीमती तूस ओढ्या, सिगड़ी स्यामी बैठ्या हा। एक बामण फाटेड़ो मगजी पर मैली सी धोती पैरया सेठां के दुआरै पर आय होयो, बोल्यो, "सो सक है सेठां, कोई गोद गिरस दिरायो।" सेठ न आलै में सोच रया हा, बोल्या कोनी। बामण फेर बोल्यो, "कोई [illegible] सिरखो चाए, बाबू"। पण बात फेर भल सुणी होगी। बामण देखता रयो पाला [illegible] आयो हो, पण सेठ कानाँ हूं बोलो होगी। आप [illegible] हाथ [illegible] "आप सो तूस में [illegible] हो [illegible] है, [illegible] है, सो क्यूं आगे।"

सेठ हाथ [illegible], [illegible] की [illegible] करै हा। [illegible] हाथ की मैं पाछो बुलायो। सेठ [illegible] तूस उतार कर [illegible] आप [illegible] बामण के हाथ पर धर दी। बामण [illegible] देख [illegible]। तूस [illegible]

कीमती तूम भट सं उतार कर देदी, या बात रामरतन जी की भाभी नैं सुहाई कोनी, बोल पड़्या, कमावै जद वेरो पड़ै।

भाभियां के तानां सैं दुनियां में किता'क देवर घायल होता आया है, के गिणाऊं ? आं पराई जाइयां के कारणं घणखरै घरां कै आंगणां के बीचूं बीच भीतां खड़ी हो'गी। भींत कै भी कान होव। बात राम रतनजी ताई पूंचगी, सुण कर वां के मन में विच्यार खड़्यो होग्यो। मिसरी में फांस कियां ग्वटावें? सरल भाव स्यूं सोच्यो, भाभी ठीक ही तो कैवे है, दूसरां की कुमाई पर दाता-री दिखाणी कुणसी भली बात है ?

सागै जीमता जीमता रामरतन जी भाईजी सें बोल्या, "मैं दिसावर जास्यूं, कुण सैं दिसावर जाऊं, आप हुकम द्यो।"

भाई जी पूछ्यो, "दिसावर क्यूं ?"

बोल्या, "इच्छा होगी, आप फरमाद्यो कठै जाऊं ?"

भाईजी पूछ्यो, "इसी के जरूरत आ पड़ी जिको तन्नै जाणो ई पड़सी ?"

पण बार बार कै कहणं स्यूं भाईजी रामरतनजी नैं मियां-मोर जाणं की अग्या देदी। जोड़ी बिछड़गी, राम अजोध्या में, लिछमण बनोबास में, एकलां सै हाट बजार जावणो ओखो होग्यो, जीमं तो गासियो मुंह में फिरण लाग ज्यावै। बात स्यामनै आई, तूस पर भाभी तकरार करी जद रामरतन दिसावर गयो। राम-रतन स्यूं कोई ई घर में तकरार करै, अर बा भी तूस के एक पूर पर ? कालजैं में डीक सी उठी, मेरै बैठ्यां रामरतन नै कोई क्युं ई

कह् दे ? अबीरचन्दजी आप की सेठाणी स्यूं बोलणो कनई बंद कर दियो ।

सेठाणी सारा उपाव कर लिया, पण बात बणी नही । धोखो मन में नावड़े नही, मैं पापण यो के कर बैठी ? भायां बीच बिछोवा करा दिया । पिमतावै की आच मे मन को सारो मेल जल बलग्यो, आत्मा कचन सी होगी, भावना ऊंची उठी । देवर देवता सो दीखण लागग्यो । देवर ही यो कलक काटै तो काटै । कागद लिखणनै बैठी । आखडल्यां का आसू ही आखर बण कर कागद पर मंडग्या ।

कागद बांचतां ई रामरतन जी का रू काटा खड्या होग्या । मेरै कारण भाभी नै इत्तो बडो डड ? कीका खाणा, कीका पीणा, हा जियां का जिया गाडी चढग्या । घर मे बडताई भाभी कन्नै पूच्या, टाबर की ज्यू बिलख २ कर गोडा में सिर दे दियो । जमना जाणै गंगा की गोद में सिमट ज्याणी चावै । पोल में खड्या अबीरचन्द-जी की गीली आंख्या दोन्या मे आ मिली तो आगणो जाणै पिराग-राज बणग्यो । सेठ सुभाविक सनेह स्यूं फरमायो, रामरतन नै हाथ मु ह धोवण दे, तूं जल पान की त्यारी कर ।

बाबू रामरतनजी बैकुठ बासी होग्या, पण मोकै ठोकै आज ताणी कैयो जावै है—के रामरतन डागो होरयो है ?

दलजी खिजड़ोलियो

गंठीलो सरीर, न घणो लाम्बो न जादा ओछो, रंग गोरू वरणो, छोटी धोली खिली खिली दाढ़ी, बदन उघाड़, धोती को एक पल्लो टांग्यां दूसरो कांधां पर गेरयां, ढलती उमर को एक आदमी बालाजी तथा श्री सत्यनारायण भगवान के मंदर कानी जावतो आवतो मन्नै रोज मिल्या करतो। सीयालो होवो चाये ऊन्यालो आंधी चूकै न मेह, नित नेम स्यूं न्हा धोकर मंदर जावै। कई दिनां पछै बेरो पड़यो अै दलजी ठाकर है, चूरू सें ७ कोस परै पीथीसर गांव का। कदे नामी धाड़वी हा, आज कालै राय बहादर सेठ भगवानदास जी बागलै की हवेली में रैवै है। बालाजी की स्तुती आपकै बणायेड़ै भजनां स्यूं करै है।

अै दो एक बातां तो म्हे भी सुण राखी ही, पण एक दिन नगर-श्री में पं० पूर्णानन्द जी व्यास सें आंकी दो एक बातां सावल सुणी तो मन करयो—ई वीर की बातां लिखणी चाए। व्यासजी म्हाराज नै ठाकर आप कैया करता, गरूजी में कदे दूसरी लुगाई कानी आंख कोनी उठाई, कीं की पीठ तकी कोनी अर कैंई तरै के नसै-पत्तै के सांकड़ै गयो कोनी। सारा जाणै है 'क जियां नीम कै पेड़ के नीचै दूसरो रूंख नहीं ऊगै, उसी तरियां रजपूती के रंग में दूसरा रस आपको रंग कदेई नहीं जमाणै सकै।

पोथीसर में राजपूतां के सागै सागै क्यामखानियां को भी पूरो घड़ो है, पोथीसर का कई आदमी बीकानेर राज मैं ऊंचे ऊंचे ओधां पर हा। दलजी का पिताजी वेगा ही गुजरग्या हा, दो सै बीघा धरती में च्यार पांती अर मामूली पैदावार, सास्ता अकाल पड़ै। पन्दरा बरसां का दलजी गंगा रिसालै में भरती होणं खातर बीकानेर पूग्या। जवानां की भरती देखण, अन्नदाता गंगासिंघजी म्हाराज आप पधारचा करता, पूछ ताछ करता। दलजी की बारी आई, अन्नदाता फरमायो—नोकरी करणो चावै है ? रजवाड़ी तोर-तरीका को दलजी नै बांनै के बेरो? यो भी बेरो नहीं के सवाल करणियां खुद अन्नदाता है, बोल्या तो के धूल खाण आयो हूँ ? अन्नदाता मुलक्या, दलजी खातर हुकम फरमायो—ईं पोथीसर हालै खिजड़ोलिये नै म्हारै अठै भेजदयो। दलजी म्हैलात के पहरेदारां में सामल होग्या, अन्नदाता की उनां पर पूरी मरजी रेंवती। दलजी को गलो क्युं ई सुरीलो हो, म्हाराज सा'ब घणी बार उनां स्यूं धमाल सुण्यां करता।

व्यास जी नै दलजी आप सारी बाता कैंवता, बोल्या एक आदमी अन्नदाता नै पोसाक पहराया करतो। एक दिन बी की लुगाई तीन च्यार बर गेट स्यूं आई गई, मैं पहरै पर हो। मुंह आगै कर आवै जावै जद देखणो तो हो ही ज्यावै, पण बीं लुगाई के धणी के क्युं ई वहम होग्यो, महल में नीचै आयो। बोल्यो न चाल्यो अर मेरै दो तीन मुक्का-थप्पड़ आया जिस्या मार दिया।

मैं जाणे हो'क यो अन्नदाता के [illegible] दानां में है, पण दलै कै [illegible] निशानी [illegible] [illegible] अर बन्दूक को बट माथै पर मारया मैं उछल्यो [illegible] हो'क [illegible] पर अन्नदाता बोल्या। आवाज आई "हूं"। मैं [illegible] पोजीशन में पड़यो होग्यो। पूरी बात सुण कर अन्नदाता जी गोलै ने इस्यो धमकायो 'क सुन्नो होग्यो।

दलजी बीकानेर रेवता अर वां के घर का बाकी मिनख पीथीसर में ही रेवता। दलजी की ओलादया भी घणी बडी कोनी ही। गांव में इस्यो कोई मिनख नहीं हो जिको ई दलजी घर नैं बांह को सां'रो देकर राखतो। फिड़्वां क्यामखानी को गांव में पूरो दब दबो हो, वो दलजी हारै घर पर आपको अधिकार जमा लियो।

दलजी सदां की ज्यूं पैरे पर खड़्या हा, डाकियो एक चिट्ठी ल्या कर दलजी नै दी, गांव स्यूं आई ही। चिट्ठी खोली, बांची कोई हितू घर का हाल लिख्या हा दलजी किरोध अर रंज स्यूं भरग्या। दजली घणा उदास पैरे पर खड़्या। अन्नदाता कठैई वारै पधारण खातर हेठे उतरया। कायदे मुजब दलजी सैल्यूट दी। धण्यां को ध्यान दलजी के चेहरै कानी गयो तो रुक्या, पूछ्यो "जुवान उदास क्यूं है ?" पण दलजी दुःख सें भरया पड़्या हा बोल नईं सक्या, जेब स्यूं चिट्ठी काढकर अन्नदाता जी के हाथां में थमा दी।

मोटा मोटा मुंधारा, भारी भारी कटारा सी मूंछ्या, गोर वरण, चेहरे स्यूं तेज टपकै, कानी आंख्यां नईं उठै, अन्नदाता जो उभा हा, जाणें रजपूती रूप धार कर ऊपर स्यूं ऊतरी है। कागद की एक एक ओली पर आंख्यां का डोरा खिंचीजण लाग रैया हा। फरमायो, क्यूं ईं करणं की हिम्मत है ? दलजी बोल्या, खम्मा घणी अन्नदाता, धण्यां को सिर पर हाथ है तो वार कोनी लगाऊं। इसारो होग्यो।

बदोबस्त होतां के वार ही ? सगा रिसालै को टालवां टोरड़ो, बन्दूक अर तरवार हाथूं हाथ मिलगी। दलजी दिन छिपे पैली ६० कोस धरती काट, पीथीसर के गोरवं मा ऊभो होयो। एक दो जणं की निगं भी पड़ी, पण दलजी गाव वारे गुवाड़ां में टोरड़ै नें झेकाय कर अ घेरो पड़नै की वाट देखं लाग्या। अ घेरो पड़्यो जगा छापलता छापलता गांव में बड्या।

दलजी आप की तरवार की नोक स्यूं सोये नें जगायो तो सोयो फफरायेड़ै सिप की ज्यूं उठ्यो। दलजी नें गड्यो देखकर सोतो पण स्यूं बोल्यो, अरे दलिया ? तू अठै मरण नें क्यूं आग्यो ? इत्ती कहकर आपको पोलादार साटो कानी सरक्यो, पण ईं बीच दलजी सोये की नाड़ ऊपर एक वार इस तरह कर्‌यो कर सिर मतीरो सो परै जा पड़्यो।

अब दलजी आपकं ऊंट कन्नै आया पर ऊंट को टाबक ई हो, २४ घंटा में सैकड़ों कोसां की मजल काटग्यो, पण आखर

हो तो हाट मांग को बगोड़ो ई । बीकानेर स्यूं डरलें नाके गाढ-वाले कन्नै पूंगतां पूंगतां ऊंट बेदम होग्यो, एकर कांप्यो अर पड़तां ई ऊंट का पिराण पंखेरू उड़ग्या । श्रोछी वरियां आडो आवणिये साथीड़े नै रोही में मूल्यो छोड़तां दलजी को हियो भर आयो, पण दिन ऊगे ई ड्यूटी पर हाजर होवणो भोत जरूरी हो। ई खातर ऊंट का गदिया, कूंची तो दलजी आप के कांधे पर टिकाया अर वठै सेती दड़वड़यो जिको आठ बजे हाले पहरे पर जा हाजर होयो ।

मींयें कै कतल होणै को रोलो तो घणो ई उठ्यो, पण कै आणो जणो ही ? हाजरी कै रजिस्टर में दलजी की हाजरी बरा-बर लागेड़ी ही, जद या बात कइयां मानणी में आवै 'क दलजी १२५ कोस को गैलो काट कर रातूं-रात पाछो आग्यो । वीं कन्नै किसी हवाई ज्याझ ही? दूसरां दरबार को इसारो थो जिको बात वठै की वठै ई रैयगी ।

दलजी ठाकर एक बर रामू ढ़ोली सागै धाड़ो मारण की फिराक मे कठैई जावै हा। रामू ढ़ोली दलजी के सासरै कानी स्यूं सैंदो होय्यो हो। आछ्यो गाबरू जुवान हो, ऊंट नै हथेली पर उठाकर ऊंट को मुंह पूरब स्यूं पच्छम फेर देतो। ऊंट ऊपर दोनूं चढ्या बगै। सिरदारसैर की रोही मे एक जुवान लुगाई उंवार में खड़ी पालो भाड़ै, सारै ई दो साड्या चरै। सांड्यां सजोरी ही, देखकर रामूडै को मन चाल्यो। बोल्यो ठाकरां, चोखै सूणां चाल्या हा, उतरो, एक मैं पकड़ूं हूं, दूसरी नै थे टोरो। ठाकर बोल्या, लुगाई कन्नै स्यूं खोसा झपटी करणी आछी कोनी, मागी नै देग स्यां। पण आख्यां आगै पांच सै को धन खड़यो, छोड़यो किया जावै ? रामू मानी नही अरं एक सांड के मूरी घाल कर पकड़ ल्यायो। दूसरी नै ल्याण गयो जद जाटणी आपकी जेली सामकर आगै खड़ी हो'गी। ठाकर तो ढोलीड़ै नै मोरू धरज्यो, पण थी के जोर सूंसावै हो। मूरी घालण लाग्यो तो जाटणी भुंभाय कर जेली फटकारी जिको रामूजी को मुंह घूल में गडग्यो। ठाकर बोल्यो, स्यावास।

ढोलीड़ै का कांन खीचकर ठाकर बीनं वैठ्यो करयो। जाटणी एक कानी खड़ी धूजै। ठाकर बोल्यो, डर मतना लाडी, मण करी जिसी पाई, जा तूं तेरो काम कर।

एक दिन दलजी आप के ऊंट पर चढ्या गांव ⋯⋯के कूवै पर ऊंट नै पाणी प्यावै। कूवै पर मोकला मादमी ऊभा, पणिहारयां पाणी भरै, इतणै मे एक जुवान सी बहू सिर पर दोघड़ सिंच

ठाकर के ऊंट भागी बीनणी अर ऊंट की मुरी पकड़ कर आपके घर कानी चाल पड़ी । ठाकर सरद में आग्या, यो के अडंगो है? या कुण है ?

गुवाड़ में कई मिनख बैठ्या हुक्को पीवै हा, बीनणी तो आपकै घर में चली गई अर ठाकर आपको ऊंट पकड़्यां आदमियां कनै खड़्यो होग्यो । ठाकर क्युं ईं सोच नईं सक्यो 'क के बात है ? घर मांय स्यूं एक बडेरो आदमी बारै आयो, नाम धाम पूछ्यो अर बोल्यो, बीनणी थांनै भीतर बुलावै है, ठाकर कै अचंभो नावड़ै कोनी । ऊंट नै बांधकर भीतर गयो, बीनणी आपको घूंघटो खोल्यो अर बोली, बाबाजी थारै उपगार नै भूलूं कोनी । थे ही जिकै दिन मेरी लाज राखी, मेरी सांड्यां राखी । अब जीम कर जावण देस्यूं । ईं घटना को ठाकर पर घणो असर होयो अर जद पीछै चोरी धाड़ा छोड़ कर भलै मिनखां में रैवण को ध्यान कर लियो ।

राजपूत की आँग

सिवाजी के वास्तै एक मुसलमान इतिहासकार कैयो है 'क सिवाजी आंधियां स्यूं खेल्या करतो, तोफानां पर चढ्या करतो। दलजी की जिन्दगी में भी इंयाल की बातां कई बरियां गुजरी, दूसरो कोई दलजी की जगां होवतो तो कदेस को उड ज्यातो।

दलजी गंगा-रिसालै की नौकरी छोड़ दी, बंधण में रहणो सुहायो कोनी। गांव (पीथीसर) में कई कारणां स्यूं रंवणो होतो दीख्यो कोनी। सिरदार दोय च्यार साथ्यां नै लेय'र धाड़ो धपियो करै लाग्या। बुरै काम का बुरा नतीजा, पकड्या गया तो गंगासाही जेल में रोजीना अठारा सेर पीसणो पल्लै पड्यो। पण दलजी कै सरीर में पोरप¹ अणथाक हो, अठारा सेर को पीसणो घड़ी'क में पीस कर कूढो कर देवै। दलजी कै सारै ही एक मुसलमान कैदी नै भी इत्तो ई पीसणो दियो जातो, पण वयुंई तो वो मुरदार हो अर वयुंई हरामी हो।

निगरानी पर जमादार भी एक मुसलमान हो। एक दिन जमादार दलजी स्यूं बोल्यो, "तूं तेरो पीसणो पीस्यां पछै ई नै मो म्हारो लगाया कर।" दलजी बोल्या, क्यूं, ई के बाप को नौकर हूं के ? आपसरी में तकरार बढ़गी। जमादार आपकी जमादारी के जोर पर कावल् सावल् ले उठ्यो तो दलजी वयां को सेवै ? आव

देख्यो न गाम, भयावणा ओल्गा एक कलवटो पर बैठ्यो, जिको जमादारजी को गाढो पीयो एकलो कन्नै आ पड्यो, गाभा भर दिया। नवली सिकायत होई, पण मान गै के आंच ही ? दलजी को जमादारजी कोठड़ियां के भोंयरे में कर दियो।

भोंयरे की कोठड़ियां में रामसीसर का एक ठाकर भी कैद काटै हा, दलजी की बात सुण कर अचरज कर्यो अर राजी भी होया। माथ्यां के बीच में बोल्या, इसै राजपूत नै आपकी बेटी ब्यावणी चाये। होणहार बलवान। ठाकरां के ही ब्यावण सावै बेटी ही, बातां-बातां में सगाई की बात पक्की होगी। जमादार को टुकाई, दलै की सगाई ! भगवान की माया विचित्तर है। दलजी सगाई की बधाई में दो रिपिया उधारा लेय कर अम्मल मंगायो, अम्मल गल्यो अर सारा साथी अम्मल कर्यो। ठाकर बोल्यो जेल स्यूं छूटतांई ब्याव कर देस्यां। सगाई की बात ब्यारू कांनी चली गई।

रामसीसर का ठाकर कैद स्यूं क्युंई पैली छूटग्या, आपके घरां पूग्या अर बाई की सगाई की बात कैई तो घरकां के जची कोनी। घर का ओलमों दियो, यो के सगारथ ढूंढ्यो ? आखर आप की बडी बेटी के देवर स्यूं दलजी की मांग की सगाई करदी दलजी भी कैद स्यूं छूट्या जद सुणी 'क थारली मांग तो दूसरै नै [illegible] है, अर ब्याह भी भोत सांकड़ो ई है। दलजी नै रीस [illegible] स भी होयो, पण उपाय के करै ? आखर [illegible] जी को आसरो लेणो चाए। दलजी

आया तो वेरो पड़्यो 'क अन्नदाता गजनेर ी कन्नै कुणसी मोटर हो ? पगाई फटकारो र जा लिया।

ायो, अन्नदाता झील के किनारै टैलावै है। दलजी । अन्नदाता के सारै ठा० गोपसिंघजी ऊभाहा, ान, जाणै अन्नदाता के सागै ई विधाता ो घड़्या हा के। दलजी नै तौर की ज्यू आवता जी सामा आया, पूछ्यो तो दलजी सारी बात बतायो। गोपसिंघजी पाछा जाय अन्नदाता नै ा घणी अन्नदाता, दलजी खिजड़ोलियो है, आपनै ारतो, ईं की माग नै दूसरो ब्यावै है, आपका । दलजी अन्नदाता के आगै पेस होया, आई जिसी दी।

ा फरमायो, राजपूतां में बात पलटणै की बाण भोत बुरो बात होवैगो। सिरदारसैर के तहसीलदार दियो, ठाकर ठीक स्यू नईं मानै तो गांव खालसै प्रर लड़की नै ल्याकर दल्लै स्यू फेरा दे दिया रती हुकम लेकर वो पगाई सिरदारसैर पूग्यो। ारजी स्यू मिलण नै उतावलो, पण फाटे भेपां ाो सो तहसीलदारजी कन्नै जावण दे। बठै ई वयामखानी सिपाही खड़्यो हो, दलजी नै सिकल ाणै हो, पण नाव घणी वार सुणेड़ो हो। वो भलै

आदमी दलजी नैं तहसीलदारजी आगै पूगता करया । दलजी दरबार को हुकम नांमों पेस करयो, तुरता फुरत कारवाई होई । बठीनैं फेरां को ब्यारो हो रेई ही, इन्नैं स्यूं तहसीलदारजी दलजी नैं तथा सवारां नैं सागै लेयकर रामसीसर पूंच्या । ठाकरां नैं दरबार को हुकम नांवो दिखायो, देखकर ठाकर सरद में आग्या । अयेड़ी बरात बैठी रेई अर दलजी चंवरी चढ्या ।

---

१. पं० चन्द्रशेखर जी व्यास बताई 'क मैं स्वामियां के मरन पर एक बार पीथीसर गयो हो, स्वामी म्हारा जजमान है । और भी भोत लोग बैठ्या हा । दलजी भी बठै आग्या । बीं जगा गुंवार रांधणै को एक 'लो को कुड़छो पड़्यो हो, जिकै नैं हाथ में लेयकर दलजी बैठ्या बैठ्या संठोली के बल् देवै ज्यूं बल् दे कर लाम्बो कर दियो । मनैं घणो अचंभो होयो, जद एक आदमी बोल्यो, व्यासजी ये दलजी है । दलजी को नाव तो सुण राख्यो हो, पण देखण को मोको जिकै दिन ई लाग्यो । फेरूं बो आदमी दलजी नैं राणी विक्टोरिया हालो १ रिपियो दियो अर बोल्यो, ठाकरां ई रिपिये नैं परख द्यो । ठाकर रिपिये नैं दो आंगलियां पर धर कर अंगूठै को जोर लगायो तो रिपियो मुड़कर ढीबसियो बणग्यो, इत्तो पुरषारथ हो बीं आदमी में ।

छोटू म्हाराज की बात

बीकानेर रियासत में रेल आवणे स्यूं पैली दिसावर जावणियां लोग चूरू सें भ्याणी या नारनोल जा कर गाडी पकड़्या करता। बठै ताईं की मुसाफरी ऊटां पर ही होतो। रस्तै में आराम के वास्तै सेठ भगवानदासजी बागलै की धरमसालांवा कई जगां बणायेड़ी ही। साठ्या कोसा को गैलो, चोर धाड़व्यां को डर बण्यो ई रंवतो। सामरथ सेठ साहूकार जावतै बेई आपके बिसवासी ठाकर लोगां की बोलाई राखता, बाकी का आपकी हिम्मत अर भगवान के भरोसै चाल्या करता।

छोटूराम जी बिरामण चूरू का ई हा, पतलामा, लांबी लांबी मूंछ्यां, सिरपर दुमालो, हाथ मे लाठी राखता, पांटोला मोत हा। स्यामनै पांच आदमी लड़्या, होवता तो भी मन में धड़को कोनी ल्यावता, सीधा गोली की ज्यूं आवता। आदमी न तो डोल स्यूं डुग्यो आवै अर न डोल स्यूं। पूओजणी हानी जोनमातरा होभे है किरको, जिको छोटूजी में घपाऊ कोनी हो। छोटूराम ऊंट राख्या करता अर भाड़ै जाया करता। बाई बेट्यां नै स्यासरै पेअसालै को काम सास्तो पड़तो रंवतो। छोटूजी का सारा गैला जाण्या पिछाण्या हा, भरोसै का आदमी हा। सेठ साहूकारां नै पूरो बिस्वास हो के छोटूराम जी सागै होतां पेर कठैई डर कोनी।

माण है, बीकी मदद करणी चाए। यूं सोचकर छोटूजी आपकी पोलादार लाठी कांधे पर साध कर एक कानी खड्या होग्या। सेठ मांकड़े सो आयो, लागा बार कर फिर्या, "छोडदे, छोडदे।" सागै हाला तरवारिया एक बार तो सिर सम्हायो पण रीठ बाजण लागी जद बोजां में पग देग्या। सेठ, सेठाणी अर टाबरियां एकला खड्या धूजे। कंई नै बेरो कोनी हो के अठै एक और मरद लग्यो खड्यो है। छोटूजी आपकी पोलादार लाठी नै घुमावता बीच में कूद पड्या, खांखटिये डील मे जाणें बीजली भरी पड़ी हो। तुरल मचा-दी। लागै जिको ई धूल चाटतो दीखै। धाडवी छोटूराम नै जाणें हा, बोल्या, बामणियां तेरो म्हे के खोस लियो ? तूं क्यूं भाठै तलै सिर माडै ? पण छोटूजी क्यांको मानै।

धाड़व्यां का ऊंट भी भोत सिखाया पढाया होवै है। छोटूजी नैं काबू में करणें खातर एक धाडवी आपके ऊंट की ठोकर छोटूजी के मरवाई,छोटूजी पडग्या, पण फेरू उठ,खड़्या होग्या। दूसरी ठोकर फेर पड़ी, अबके उठ्यो कोनी गयो। छोटूजी जमीन पर पड्या अर धाडव्यां की तरवार्यां छोटूजी पर. छोटूजी नें सांगो-पाग छांग गेर्यो।

करम जोग की बात. छोटूराम जी जिकी बाई नै आप हालं ऊंट पर चढ़ा कर बूंटिये कानी भीर करी हो, बा देख्यो के बावो तो आयो कोनी. गैलनै के करतो रह्यो ? बा ऊंट नै पाछो मोड दियो अर पाछी बठेई आ पूंची जठै सुवागत करणियां त्यार खड़्या हा। छोटूरामजी पड़्या पड़्या देखता रैग्या, या अण होणी

कियां होई, मेरलो ऊंट अठै पाछो कियां आयो ? पण निजोरी बात, धाड़वी मारो मालमत्तो छोटूरामजी हालै ऊंट पर घाल कर जाता रेया । छोटूराम जी महीना छः स्यूं खड़्या होया ।

"परोपकाराय सतां विभूतयः" की बात वीं दिन साम्प्रत देखण नै मिली । बोलाई की बातां चालै जद छोटूराम जी बिरामण याद जरूर आवै ।

लाख रिपियां की बात

जणनी जणैं तो दोय जण, कै दाता कै सूर ।

मालूम होवै है ई बात नै कैणं वालो कवि कठैई कंई ओढरदानी नै दोनूं हाथा बरसतो देख्यो हो । वखत पड़्या जिया सूरवीर आप को सिर देतो वार कोनी लगावै, बीयां ई मोको आया दातार भी आपकी भोली भड़कावतो आगो पीछो कोनी देखै । सेठ सोहनलालजी दूगड़ खातर देखतां देखतां मेरी इसी ही धारणा बणगी । भोली भड़काणियां दातारा मे आजकालं आं नै नम्बर एक मानूं हूं । मन्दर, मंजत, गिर्जा,गुरु-द्वार नै सेठ की कुमाई का मोटा भाग विना भेद भाव के मिल्या है तो सभा, संस्था, क्रान्त्यां अर कंदया तकायत का हाथ सेठ की हांडी मे रंवता आया है । राज अर रंय्यत का वडा बड़ा कर्णधार दूगड़जी के दयादान का अभिनन्दन पत्र पढै है तो गाव के किनारै खड़ी खुड्डियां में सेठ की दियेड़ी सोड़यां ओढ्या गरीबां का टाबरिया भी ई मिनख का गीत गावै है । सेठजी के बारै में साथी संगलियां स्यूं मोकलो बातां मिलो, पण अठै मैं आप बीती एक बात बताऊं हूं, जिकी सें सेठ सा'ब की उदारता के सागै बांकी ब्योहार कुसलता को भी बेरो पड़ै है ।

बात सन् ५३-५४ की है । बागला हाईस्कूल में श्री बिसेसर-

दयाल जी गुप्ता हैड-मास्टर हा। स्कूल में कई बातां की कमी ही। टाबरां खातर पाटिया, टाट पाटड़ा वगैरा, खेल को मैदान तो गायां की गुवाड़ ही हो, बीं के च्यारूं मेर लोवै का तार लगज्या तो क्युं ई रूप सुधरै। योजना बणी, अढ़ाई हजार रिपिया होवै तो काम सरज्या। बातां कई तरै की चाली, पण आखर सेठ सा'ब कानी ध्यान जम्यो। साथी मास्टर बोल्या, बिहारी ई खेल नैं पटावै, पूरी सम्मति स्यूं प्रस्ताव पास होग्यो। जात को बामण, काम मांगण को, अब के चिन्त्या, गुप्ताजी नचीता होग्या

धन्धो मेरै डोल सारू ठीक ही सूंप्यो गयो हो। पण ई कला नै पैली कदे वापर कर कोनी देखी ही, जिकै स्यूं मन ओटो ओटो चालै हो। "मरज्याऊं मांगूं नहीं, अपणें तन के काज, परमारथ के कारणै मोहि न आवै लाज।" ई कंवत का सैंकड़ी इंजेक्शन मारचा, जद क्युं ई आगी नैं पग उठ्या। दो विद्यार्थियां के सागै जैपर में सेठां की जूरी बजार हाली गिद्दी में जा खड़्यो होयो।

सवेरै की टेम ही, सेठ गिद्दी में बिराजमान हा, राम रमी होई। गुप्ताजी म्हारै लोगां को परचो देकर पूरी बात टाइप करवा दी ही, रुख देखकर कागद सेठां नैं झलाया। सेठ क्युं ई बेदमाल सा दीख रैयां हा, खांसी स्यूं परेसान हा। कागद पढ़्या, मेरै स्यूं बात की निगै करी। कागद ओटा देकर फरमायो, "मेरी इच्छा कोनी।" दो बार कहणैं की मेरी भी वाण कोनी, झट कागदां नैं गोजै में घाल कर टाबरियां नै कैयो, उठो-बेटा, अर खटा खट पैड़्यां उतरग्या।

मेरै मन में जरा भी दुःख नईं हो, सोच्यो, रामलीला, रासलीला अर गऊसाला के नांव पर नै जाणै किती'क भात का भला आदमी ईं मिनख नै स्यारता होसी। सेठ तो गंगा की खुली धारा ई है, जरूर मेरै में ईं कोई कमी रैई है। नीचै सडक पर आया ईं हा 'क ऊपर स्यूं मुनीमजी ठहरणै खातर कैयो। दो एक मिन्ट में सेठ भी नीचै आया, आपं राम रमी करी, बोल्या थे लोग चूरू स्यूं म्हारै अठै ई आया हो ?" मैं उथलो दियो, "जी हां, दो म्हीना स्यूं घडीकै हा, बेरो पड़ता ईं सीधा आपकी सेवा मे………।" जवाब में इत्तो कहतांईं सेठ मोटर कानीं इसारो करता बोल्या; अब थे म्हारा मेहमान हो, चालो मोटर में बैठो।.

रस्तै में सेठजी आपकी की रुचि की सब्जी तरकारी खरीदी अर मोटर कोठी पूगी। सेठ आप स्यामनै मूंढे पर विराज कर म्हांनै घणैं सनेह स्यूं जिमाया, खाटो सुपारी लेकर म्हे लोग सीरहोए खातर नमस्कार करी तो आप गभीर भाव स्यूं पूछ्यो—

……………… मास्टरजी तीन जणा जैपर आया, के लाग्यो ?"

मैं उथलो दियो, "जी आणै जाणै में पचास'क रिपिया पूरा हो ज्यासी।"

सेठ फेरू पूछ्यो, "गूरू में कित्ता'क लखपति किरोड़पति है?"

उथलो दियो, "जी लखपति तो मोकला है, पांच सात किरोड़पति भी—।"

अब सेठ जमर र बोल्या, "पचीस में रिपियां खातर पचास रिपिया पूरा करकै तीन आदमी इत्ती दूर आया, दो महीनां इंतजार करदो.

सो कै तो आप आदमी चोखा कोनी, कै आपकी इस्कीम चोखी कोनी । अर कै यो गांव चोखो कोनी जद इत्ती बड़ी बस्ती में इतणा सा पीसा कोनी मिलै, जद म्हे भी क्युं देस्यां ?"

लो'वे को नानो टुकड़ो जितो ई कूट्यो पीट्यो जावै, बित्तो ही लांबो-चोड़ो होतो जावै । मेरो मन भी दूगड़जी की करारी चोटां स्यूं बडो होतो गयो । सही सोचणो, साच कहणो, यो भाव आत्मा में उठ्यो । मैं भी बित्ती ही गहराई अर अदब स्यूं बोल्यो, "सेठ सा'ब आप मन्नै लाख रिपिया दे दिया, मैं जाकर देख स्यूं तीन्यां में कुण न्याऊ है ?" राम रमी करकै तीनूं जणां दरवाजै स्यूं बारै निकल् ग्या ।

मेरी मानता है 'क गरु, पिता अर कवि आं तीन्यां की कड़वी बाणी में भी मोकलो हित भरयो रैवै है । "उतिष्ठ जाग्रत" की ललकार स्यूं न जाणै कित्ताक चेतो करयो है । आज मेरी आत्मा में भी ऊंची भावना ही काम करै ही, सही बात सोचै हो, सही दिष्टी स्यूं देखै हो । सेठ मेरै मन में और भी ऊंचो लागण लागग्यो । स्कूल में आयो, पूरी रपोट देई, मिठास भरी मजाकां उडी, पण पांच सात साथी कमर कस कर खड़्या होग्या अर दो तीन दिनां में ही काम पार पड़ग्यो ।

❖ ❖ ❖

दो म्हीना करीब बीतग्या । एक दिन संज्या नै मैं स्कूल स्यूं आरयो हो 'क सेठ चन्नणमल जी पारख की हवेली आगै कई हरि-

जन भाई खड़्या-बैठ्या दीख्या । सोच्यो, ईं हवेली के आगै आं को के काम? बेरो पड़्यो 'क सेठ सोहनलालजी दूगड़ आयोड़ा है । सुण कर आगीनें भीर होग्यो , चालतो वग्यो, पण मनकरे 'क दरसण करूं । जंपर में सेठां नें बेदमाल सा देख्या हा, अब कियां है, देखूं। सेठ तो राजस्थान को रतन है, ईं अंधेरे घर को दीयो है । नया नया भाव मन में आवण लागग्या, पग थमग्या, पाछो मुड़ग्यो ।

हेली मे होलै होलै चढ्यो । पन्दरा साल स्यूं हेली के आगै कर वगै हो, पण हवेली के मांय पग टेकण को आज पैलो ई मोको हो । मोचै हो, क्युं जाऊं हूं ? कोई सुवारथ ? नही ! मुलाकात ? नही, कठै एक किरोड़पति, कठै मैं ? तो ? आदमी, आदमी कन्नै जावै, के बुरी बात है ? अर आदमी भी इस्यो काजबीज के जिकै स्यूं धरती ओपै । साफ मन, सौ गुणी हिम्मत स्यूं ऊपर चढ़ग्यो ।

देखतां ईं श्री रावतमलजी वैद बोल्या, आओ मास्टरजी । बैठक मे मसंड कै मारं सेठ बैठ्या हा । स्यामनें एक कानी बैदजी अर दूसरै कानी भाई नेमचन्दजी मणोत बैठ्या हा । मैं गिदरै के एक कूणं पर बैठण लाग्यो, पण सेठ मरकता सा बोल्या, "अठै बैठो, गरू तो आप की जगा ईं ओपै ।" आग्रह मे स्नेह को जोरहो, ओप्यो तो कोनी, पण वां वठायो जठै बैठणो पड़्यो । वातां चालै ही, फेरूं चालै लागी।

नेमचन्दजी मणोत जोर दे रैया हा के आज संज्या को भोजन म्हारै अठै आरोगो। सेठ सा'ब फरमा रैया हा,माजी सा का दरसण करण नैं आऊंगा जणा दूध बठैई पीऊंगा । जीमणै की बात

रावतमल जी स्यूं पहली ओगेली ही । डूगड़जी दूध पर ही जम्या रैया तो मेरै मन मन में भी कमाई उपजी । सेठ जी मन्नै पिछाण्यो कोनी, या बात साफ दीखै ही । मैं सोचै हो, कियां याद दिराऊं के मैं जेपर में आपके हाथ में ओगेड़ो हूं । मगोतजी कानी मुड़कर मैं बीच में ही बोल पड़्यो, "भाईजी दूध की बात ही राखो ।"

घर को वोट विरोध में पड़तो देखकर मगोतजी कैयो, "वाह मास्टरजी, वास का होकर या के बोल्या ? मैं तो देखै हो ना'रो लगास्यो ।" मैं बोल्यो भाईजी, भोजन अर दूध के आग्रह को तो मेरो डोल कोनी, पण मेरो मुआरथ इत्तोई है 'क मैं भी थारलै दूध में म्हारलै घर को थोड़ो सो पाणी मिलाद्यूं तो क्युंई उरिण हो ज्याऊं ।" बात फीकी ही, पण मौकै की होणै स्यूं नीकी होगी। रावतमलजी पूछलियो, "यो कुणसो रिण है ?" मैं थोड़ै से में जैपर वाली बात कहदी । सेठां कै भी बात याद आई, बोल्या, "दो लड़का भी आप कै सागै हा ?" रावतमलजी बात नै उठाली- राज की रीत नीत स्यूं लड़कां की हड़ताल होई, आप सौ रिपियां को काठ दियो हो; ई प्रसंग में मास्टरां के उद्योग की बात भी कह गेरी । सेठ ध्यान स्यूं सुणै हा, सेठां को कोमल सुभाव तो हो ही, बात की सचाई अर वातावरण को असर भी होयो । सेठ गंभीर भाव स्यूं बोल्या, रावतमलजी, मेरै स्यूं एक पाप होग्यो, मास्टरजी जरूरत पर म्हारै घर गया अर मैं इन्कार कर दियो ।

मैं धृष्टता करी; बीच में ओजूं बोल पड़्यो, "सेठां, आप म्हानै लाख रिपियां की शिक्षा दी ही, अठै आवतां ई मैं

गाहकाणं म्हारी इच्छा पूरी करदी।" सेठ बोल्या, नहीं, अपराध होग्यो हो, अब आप फरमावो, या समस्या सुलझगी के ? मैं कयो, "आपतो खुला भंडार हो, सबकी भावना पूरी होवै है, फेरू जरूरत होवैगी तो......।" पण सेठ मान्यो कोनी, बोल्या "नहीं, तड़के मैं स्कूल में आऊंगा, प्रायश्चित तो करणो ई है। सेठां के नेत्रां में सद्भाव उमड़तो देखकर मैं भी गलगलो होग्यो।

इजाजत मांग कर सीधो गुप्ताजी के घरां गयो, सारी बात बताई। सुणकर वैं फौरन मिलण नै गया। म्हे लोग परोग्राम बणायो के सेठजी नै ल्यावणं ताईं हेडमास्टरजी खुद तांगो लेकर जावैं। पण दूसरै दिन ठीक ग्यारा बजे सेठजी खुद ही पांच सात भलै मिनखां सागै स्कूल में पूंचग्या। म्हे तो सोची ही 'क सेठजी के स्वागत लायक सामान सजोसागा, पण माथल भिर विछायत भी कोनी कर पाया हा 'क सेठजी आपंई पधारग्या।

सेठ सा'ब के अनुरूप सरूप तो म्हे क्युंई नईं कर सक्या; पण जो क्युंई भी कर्‌यो वो बानै भोत सुहायो। आपके भापण में आपके मनकी सारी विथा उडेलता होया घणो पिसतावो कर्‌यो। एक विदवान् के सागै आपकी ओपमा या इसी तुच्छ वस्तु स्यूं देई 'क लिखी नहीं जा सकै। हिरदै के उद्‌गारां सागै थली को मुंह भी खुलग्यो, दो टाइप राइटर, पांचसै रिपियां को नईं विचार धारा को साहित, टावरां नै सौ रिपियां की मिठाई, अनेक छात्रां नै किताबां अर कपड़ां को खुलो हुकम।

बस्तु की मात्रा को मोल नईं, बीके गुण को मोल होवै है !

वीं दिन दान की [illegible] [illegible] [illegible] नैं मिली, वा अनोखी ही। [illegible] की [illegible] नैं [illegible] [illegible] की रिमझिम मानली जावै तो सेठ [illegible] नैं चांदी को बादल् ई कैणो चाहिजे। इकाई दहाई स्यूं लेकर [illegible] [illegible] को [illegible] [illegible] जोड़्यो जावै जद वेरो पड़ै [illegible] [illegible] में कितीक करामात है।

×　　　×

एक बात और याद आ'गी, कंये बिना कोनी रंयो जावै। गुप्ताजी के वखत की ही बात है। स्कूल फल-फूल रैई ही, हर साल सैंकड़ी की संख्या में छात्र बढ ज्यावता। वाणिज्य प्रधान विषय हो, पण टाइप-राइटर नैं होणै स्यूं छात्रां की भरती रुकगी। ७०-८० लड़का वेकार फिरै। संजोग स्यूं वीं वखत का शिक्षा मंत्री श्री नाथूराम मिर्धा को पधारणो होयो. श्री कुंभारामजी आर्य भी सागै हा। स्कूल के आंगणे में नागरिका, शिक्षकां अर विद्यार्थियां के बीच खड़्या होय कर मंत्री जी फुरमायो, "इन सब छात्रों को भर्ती करो, आपके पास सात मशीनें जल्दी ही पहुँच जाएंगी।" खुसी में तालियां बाजी। हुकम मुजब मंत्री जी को पी०ए० आपकी डायरी में या बात नोट करली। दूसरे ही दिन सारा लड़का भरती होग्या, पण टाइप राइटर कठै ? दो म्हीना बीतग्या, स्कूल में हड़ताल होगी।

गुप्ताजी कै जगाणै स्यूं ओजूं नई उमंग जाग पड़ी। झोली उठाई अर टाइप राइटर ल्यावण नैं कलकत्ते पूग्यो, साथियां स्यूं

जाय जे रामजी की करी। भाई रावतमलजी पारख के सागै वालीगंज गयो हो; रस्तै मे सेठ सा'ब की कोठी आई तो भाई जी बोल्या, "दूगड जी स्यूं मिलां, आज कालै तबीयत क्युंई नरम है।" मिलणै की भावना तो मेरै मन में भी कई बार आई ही, पण ईं टाइप राइटर मांगणै के सिलसिलै में जाणो ठीक कोनी समझ्यो। इब घर के आगै आया फेर किया रैयो जावै ? ऊपर गया, सेठ सा'ब बैठ्या एक छोटो सी काकड़ी छील रैया हा। सेठजी आव-भगत देई, कुमल प्रस्न होया। इब कै मन्नै ओलख लियो, काकड़ी बाट कर खाई, उठता उठता मेरै आणै को प्रयोजन पूछ लियो।

मैं तो मेरी मंगता गिरी की बात नही कैणी चावै हो, कारण, जिकै मिनख कै धन की हर टेम दूसरां खातर धारा सी चालती रेवै, बी नै छोटै मोटै काम खातर स्यारणै ठीक कोनी, एक ही आदमी पर लद पड़नो ठीक नईं। दीवै को जागणो हाबूलां खातर थोड़ो ई होवै है ? पण भाईजी स्कूल मे मन्त्री जी के आसवासन स्यूं लगाय कर टायरा की हड़ताल ताणी की सारी बात बतादी और सागै मा भी कह दी 'क मास्टरजी प्रयत्न कर रैया है। मैं सकोच बस भेलो भेलो हो रैयो हो, दो एक पांवड़ा पैडियां कानी भी दिया। पण मोमबत्ती आपकी आंच स्यूं आप ही पिघलै, बी को कोई के करै।

भाईजी के हाथ मे कंदनियां का कैट लॉग हा। सब स्यूं घणी कीमत वाली मसीन के आपकै हाथ स्यूं निसाण लगा दियो, बोल्या,

चनणमलजी कन्नै जाओ, बोल देयो, मोहनलाल कयो है, इसी एक मशीन मास्टरजी नै देणी है, नहं तो मेरो नांव ने देयो। बादल के बरसणे के सुभाव नं सराऊं 'क विद्या-मंदिर के परताप नै सराऊं ? पांच की धारणा बणा कर चाल्यो हो, दस लेकर आयो।

मरुधर के ई लाडेसर की या बात कह कर जीभ तो अनेक बार आनन्द लियो हो, आज कलम भी कृतार्थ होगी ।

कुन्जविहारी स्मृति ग्रन्थ माला

के

आगामी पुष्प

(१) श्री कुन्ज विहारी स्मृति सुमन

(२) वार्ता ही चालै–भाग दूजो ।

इस में पहले भाग से अधिक बातें होंगी ।

(३) चूरू जिले की वनौषधियां ।

इस में चूरू जिले की समस्त वनौषधियों

के सम्बन्ध में अत्यंत उपयोगी और

सचित्र जानकारियां होंगी ।

नगर-श्री चूरू

द्वारा

चूरू जिले का राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यक, व सांस्कृति

वृहत् इतिहास

दो खण्डों में प्रस्तुत किया जा रहा है।

चूरू जिले के अनेक महत्वपूर्ण और अप्रकाशित तथ्य

पहली बार सामने आ रहे हैं

इतिहास में अनेक दुर्लभ चित्र भी होंगे।

पहला खण्ड मुद्रण के लिए तैयार है,

प्रति शीघ्र सुरक्षित करवाइये।

नाथ्री चूरु

द्वारा

...िक, ...ार्मिक, आह्निक, ...

...हत् इतिहास

...स्तुत किया जा रहा है।

...हत्वपूर्ण और अप्रकाशित

...ने सामने आ रहे हैं

... दुर्लभ चित्र भी होंगे।

...ण के लिए तैयार है,

...ग्र सुरक्षित करवाइये।

೭೧೬೮.
೭-೧೦-೬೦
[illegible]